दिसम्बर 2002
Rs. 10/-
चन्दामामा

चिंटू की पसन्द
उत्कृष्ट पसन्द ! मैसूर चन्दन बेबी साबुन चन्दन के तेल और बादाम के तेल से भरपूर है। यह त्वचा के लिए अति उत्तम है।
Mysore Sandal Baby Soap
Almond oil moisturiser and antiseptic soap.
द हाउस ऑफ मैसूर सन्दल चन्दन की खुशबू सीधे आपके घरों में ८० से भी अधिक वर्षों से ला रहा है।

PIRANHA

ACTIVE

CADET HX

YANKEE

ROBO COP

Heroes start early.

Ride, race, take a tumble or even take a fall.
Because it's never too early to be a hero.

ORISSA
The soul of India
Touch Orissa to feel India

एक किशोर की खोज

"माँ ! गाँववाले मेरे पिता के विषय में बड़े सम्मान के साथ बात करते हैं। 'बारह वर्षों तक घर से दूर रहकर उन्होंने बहुत बड़ा त्याग किया है।' वे कहते हैं। वे कहाँ हैं माँ? और कब तक आनेवाले हैं?" एक बालक ने माँ से पूछा।

"तुम्हारे पिता एक विशाल स्मारक के निर्माण में लगे मूर्तिकारों और शिल्पियों के एक बहुत बड़े दल का नेतृत्व कर रहे हैं, मेरे बच्चे ! और मुझे नहीं मालूम इस काम में कितना समय लगेगा।"

बालक आँखें बंदकर शान्त बैठा रहा मानों वह अन्तर्दृष्टि से देख रहा हो कि उसके पिता के पर्यवेक्षण में सैकड़ों कर्मी एक विशाल मंदिर के निर्माण में लगे हैं।

"माँ, कृपा करके निर्माण-स्थल पर जाने और पिता से मिलने की अनुमति दीजिए।" बालक ने अनुरोध किया। "मेरे वत्स, राजा की आज्ञा पर पिता के जाने के एक महीना पश्चात तुम्हारा जन्म हुआ। उन्होंने तुम्हें कभी देखा नहीं। वे तुम्हें कैसे पहचान पायेंगे?"

"मेरे पिता मुझे अवश्य पहचान जायेंगे। कल्पना कीजिए, वे मुझे देखकर कितना प्रसन्न होंगे? और माँ, क्या आप कल्पना नहीं कर पातीं कि मैं अपने पिता से मिलकर कितना गद्-गद् हो जाऊँगा।" बालक ने कहा। वह माँ से निवेदन करता रहा और प्यारी माँ ने अन्त में उसे जाने की अनुमति दे दी। उसने आंगन के एक वृक्ष से एक मुट्ठी बेरी उसे दी जो उसके पिता को बहुत पसन्द था।

बालक पैदल चलता रहा। और अंत में निर्माण-स्थल पर पहुँचा। पिता के लिए अपने नन्हें तीक्ष्ण पुत्र से मिलना कितने आह्लाद की बात है !

शीघ्र ही बालक को पता चला कि उसके पिता और अन्य विशेषज्ञों को मंदिर के शिखर की स्थिति निश्चित करने में कठिनाई हो रही है। बालक ने घर पर रखी वास्तुकला की एक दुर्लभ पुस्तक पढ़ रखी थी। उसे इस समस्या के समाधान से संबंधित कुछ सिद्धान्तों का स्मरण हो आया। उसके परामर्श को कार्यान्वित किया गया। और वाह ! वह कारगर हो गया !

प्रश्न

१. मंदिर का नाम क्या है? और उसके आराध्य देव कौन थे?

....

२. बालक, पिता और मंदिर का निर्माण करवानेवाले राजा का नाम क्या है?

....

३. वह नाम क्या है जिसके द्वारा अंग्रेज इस मंदिर की चर्चा करते थे।

....

केवल १४ वर्ष की आयु तक के बच्चे भाग ले सकते हैं। अपने उत्तर दिये गये रिक्त स्थानों में स्पष्ट अक्षरों में लिखें। नीचे दिये गये कूपन को भरें और प्रविष्टि को निम्नलिखित पते पर भेज दें।

Orissa Tourism Quiz Contest
Chandamama India Limited,
No.82, Defence Officers' Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

नाम : .... आयु : ....

पता : .... पिन : ....

One winner picked by Orissa Tourism in each contest will be eligible for 3 days, 2-night stay at any of the OTDC Panthanivas, upto a maximum of four members of a family. Only original forms will be entertained. The competition is not open to CIL and Orissa Tourism employees and their family members. Orissa Tourism, Paryatan Bhaven, Bhubaneswar-751 014. Ph:(0674)432177, Fax:(0674) 430887, e-mail:ortour@sancharnet.in. Website:Orissa-tourism.com

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०६ दिसम्बर - २००२ सञ्चिका - १२

भानुमंत की कहानी

१९

हज़ार अशर्फ़ियों की गठरी

३५

माया सरोवर-११

१३

अक़्लमंदी की रवानगी

५७

अन्तरङ्गम्

★ जीवों पर दया ...११ ★ माया सरोवर-११ ...१३
★ भानुमंत की कहानी ...१९ ★ एक विलक्षण बालक - जिसने अपने पिता को मुक्त कराया ...२४ ★ भारत दर्शक ...२७
★ सत्यवान की चाह ...२८ ★ समाचार झलक ...३१ ★ दोनों के दोनों ...३२
★ हज़ार अशर्फ़ियों की गठरी ...३५ ★ भूत का चोगा ...३८
★ अपने भारत को जानो ...४४ ★ विघ्नेश्वर-१२ ...४५
★ उपकारी ...५१ ★ व्यापारी की जिम्मेदारी ...५५
★ अक़्लमंदी की रवानगी ...५७ ★ अपराजेय गरुड़-२२ ...६०
★ मनोरंजन टाइम्स ...६४
★ चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...६६

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

for young bookworms!
Hiya! What has hit the animal world?
Listen hard and look keenly.
D'you hear the jingle of the jungle?
JUNGLE JINGLES
A Set of five story books
with the whackiest and most
interesting collection of animal stories ever written.
From
CHANDAMAMA and Popular prakashan
Festival Offer!
Save
Rs. 50/-
DISCOUNT COUPON
Come into the enchanted world of JUNGLE JINGLES and avail a discount of Rs 50 on a set of five books on the cover price of Rs 200. Or you can get Rs 10 off on each title of Rs 40. Offer open for a limited period only.
So hurry! Tick the titles you want.
❑ The Itch to Fly and Other Stories
❑ The Tiger with the Most Wonderful Tail and Other Stories
❑ The Great Escape and Other Stories
❑ The Donkey's Downfall and Other Stories
❑ The Cunning Pelican and Other Stories
Send your payment by DD or MO to: Popular Prakashan Pvt. Ltd.,35-C M.M Malaviya Marg, Popular Press Building, Tardeo, Mumbai 400034. For enquiries contact sales@popularprakashan.com. Visit our site at www.popularprakashan.com

'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक-१५

यहाँ हमारे देश के कुछ साहित्यिक नायकों का प्रसंग आया है। क्या उन्हें तुम जानते हो?

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

1. मैं 'आनन्द मठ' उपन्यास का लेखक हूँ, जिसमें 'वन्दे मातरम' गीत है। मेरा नाम बताओ।

----

2. मैं हिन्दी भाषा का पहला लेखक था जिसने अपनी रचनाओं में यथार्थ को स्थान दिया। मैंने सामाजिक समस्याओं पर आधारित कथा साहित्य की अगुआनी की। 'सेवासदन' तथा 'गोदान' मेरी सर्वोत्तम कृतियाँ मानी जाती हैं। मैं कौन हूँ?

----

3. मैं एक विख्यात तमिल लेखक हूँ। मुझे अपने उपन्यास 'चित्तिरपावई' पर सन् १९७५ में ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। मेरा नाम बताओ।

----

4. मैं अपनी कहानियों जैसे 'स्वामी एण्ड फ्रेंड्स, गाइड, द डॉर्क रूम, के काल्पनिक घटनास्थल मालगुडी का निर्माता हूँ। क्या तुम मुझे जानते हो?

----

5. मैंने ऋग्वेद का अनुवाद मलयालम भाषा में किया है। क्या तुम मुझे जानते हो?

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें

मेरा प्रिय राष्ट्रीय नायक ....है, क्योंकि

....

प्रतियोगी का नाम: ....

उम्र: .... कक्षा: ....

पूरा पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर: ....

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ जनवरी २००३ से पूर्व भेज दें-

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-१५
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईक्काडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुईं तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

हम अपने देश को जानें

भारत में आदि शंकर, स्वामी विवेकानन्द तथा महात्मा गाँधी जैसे व्यक्ति थे जिन्होंने पूरे देश में भ्रमण किया था और अनुभव किया था कि यहाँ की हर शिला, वृक्ष अथवा सरंचना भावी पीढ़ियों के लिए सन्निहित महान परंपरा की कहानी कहती है।

हमें बताया गया है कि सदियों पहले शंकराचार्य ने और हाल में विवेकानन्द ने पूरे देश की पैदल यात्रा की थी। कन्याकुमारी में समुद्र की विशाल जल राशि से घिरी शिला पर ध्यान में बैठे जब स्वामी ने उत्तर दिशा की ओर निहारा तब उन्होंने न केवल देश की विशालता की कल्पना की वरन इसमें निहित ज्ञान की गहनता को भी देखा।

गाँधीजी राष्ट्रीयता और अहिंसा का संदेश फैलाने के लिए भारत के कोने-कोने में गये। वे कहा करते थे, ''मैं भारत के प्रति समर्पित हूँ, क्योंकि मेरा सब कुछ उसी का है।''

स्कूल के छात्रों को शैक्षणिक पर्यटनों पर ले जाया जाता है, लेकिन इनकी अपनी सीमाएँ हैं। छात्रों को अपने देश के बारे में अधिक जानकारी के लिए अन्य अवसरों की खोज करनी चाहिए, पुस्तकों अथवा टी.वी. द्वारा नहीं, बल्कि उन स्थानों का भ्रमण कर जहाँ वे पहले नहीं गये हों। पर्यटन निश्चय ही उनके दृष्टिकोण को विशाल बनायेगा।

हमें, भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा ने सुदूर अंतरिक्ष से क्या कहा था, उसे याद रखना चाहिए - **सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा**। भारत सभी देशों में श्रेष्ठतम है।

सम्पादक : *विश्वम*

Editor : VISWAM

Visit us at : http://www.chandamama.org
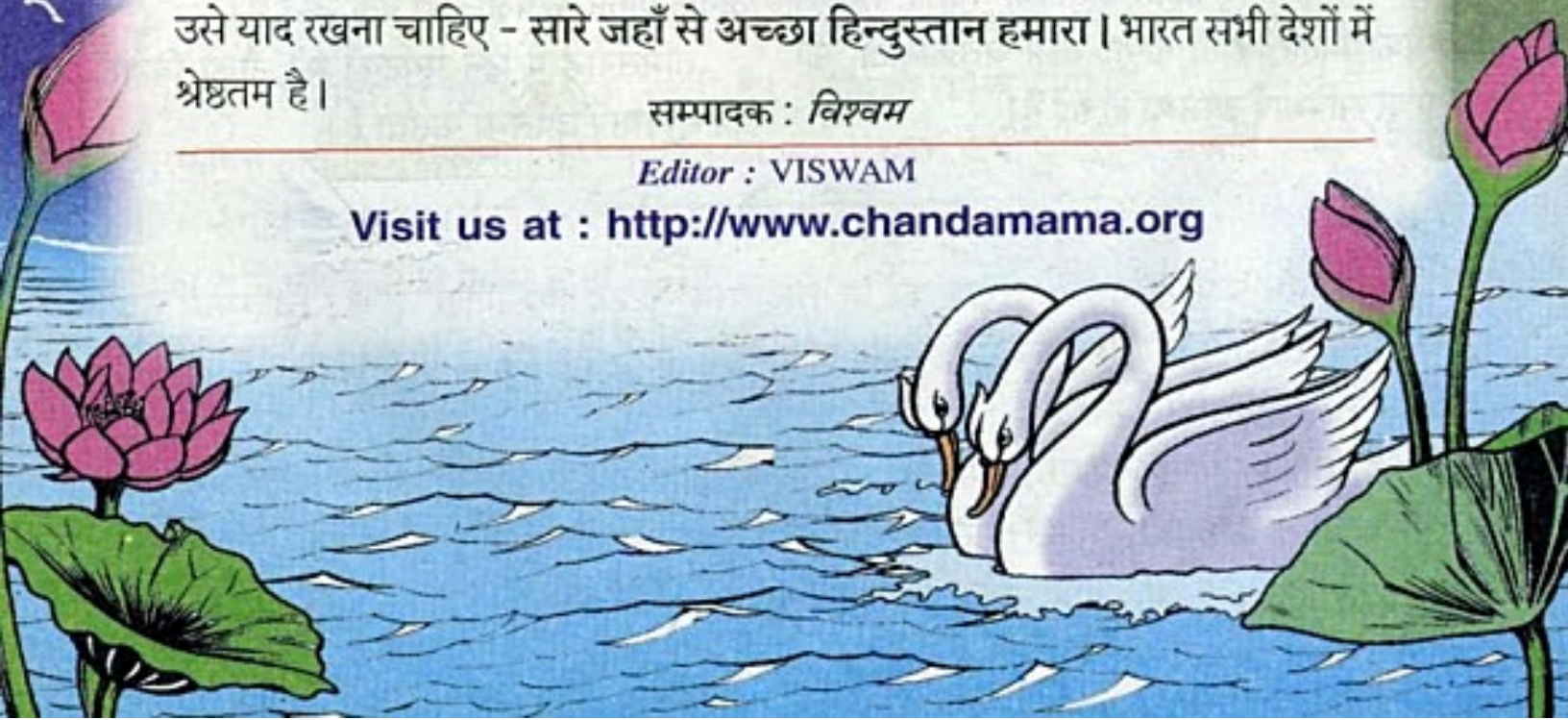
पीचावरम

अगली बार तमिलनाडु भ्रमण करने की योजना बनाते समय दर्शनीय स्थानों की सूची में पीचावरम को शामिल अवश्य कर लेना। इसके उत्कृष्ट प्राकृतिक सौंदर्य में प्रचुर और विविध पर्यटन-साधन हैं।

पीचावरम वन में उद्भिज जगत की एक दुर्लभ उपस्थिति है - कच्छ वनस्पति। कच्छ वनस्पति के वृक्ष की जड़ें स्थायी रूप से जल में रहती हैं। पीचावरम की कच्छ वनस्पति को विश्व भर में कच्छ वनस्पति की सर्वाधिक स्वस्थ उपस्थिति माना जाता है।

दो हजार आठ सौ एकड़ के वन में आड़ा-तिरछा अप्रवाही जल हैं जिनसे अनेक द्वीप बन गये हैं। वन समुद्र से एक बालूभित्ति द्वारा अलग कर दिया गया है, जिससे एक असाधारण सौंदर्य की पट्टी बन गई है। अप्रवाही जलों में वेलर और कोलेरून जल प्रणाल द्वारा अंतर्संबंध स्थापित कर दिया गया है, जिससे नौका विहार, डोंगी खेवन जैसी जलक्रीड़ाओं की प्रचुर सुविधाएँ उपलब्ध हो गई हैं।

हरे-भरे वृक्षों से घिरा बृहत् जल विस्तार किसी भी प्रकृति-प्रेमी के लिए स्वर्ग है। ऐविसिनिय और रिज़ोफोरा जैसी पौधों की दुर्लभ प्रजातियाँ यहाँ पायी जाती हैं।

जब पीचावरम भ्रमण के लिए आओ तो दूरबीन और कैमरा लाना कभी न भूलना। यह पक्षी अवलोकन के लिए आदर्श स्थान है। जलकतरनी (वाटर स्निप्स), पनकौवा, अरगेट्स, जांघिल (स्टॉर्क्स), बगुला, चमचाचोंच, जलसिंह आदि अनेक प्रकार के पक्षी यहाँ देखे जाते हैं।

तमिलनाडु पर्यटन पर्यटकों को नौका विहार की सुविधाएँ उपलब्ध कराता है।

वहाँ कैसे पहुँचे

पीचावरम ब्रह्माण्ड नर्तक-नटराज का घर चिदम्बरम से १६ किलोमीटर दूर है। चिदम्बरम तक चेन्नई, मदुराई और तिरुची से रेलमार्ग है। यह सभी मुख्य नगरों से सड़क से भी जुड़ा हुआ है। तिरुची निकटतम हवाई अड्डा है।

तमिलनाडु पर्यटन विकास निगम द्वारा पर्यटक की आवश्यकता के लिए काटेज तथा रेस्तरां की सुविधा उपलब्ध करायी जाती है। बस, टैक्सी, ऑटो रिक्शा की सेवाएँ भी उपलब्ध हैं।

जीवों पर दया

गंगा नदी के किनारे है, गाँव रामनगर। वहाँ का एक निवासी है, धवन। वह घोड़ागाड़ी चलाता है और अपनी रोज़ी कमाता है। वह हद से ज़्यादा घमंडी है। उसे इस बात का घमंड है कि गाँव भर में सिर्फ उसी के पास घोड़ा-गाड़ी है और किसी को कहीं जाना हो तो उसकी मदद लेनी ही होगी। इसलिए ग्रामाधिकारी जैसे प्रमुख लोगों की भी वह परवाह नहीं करता। चूँकि दूसरी घोड़ागाड़ी नहीं है, इसलिए लोगों को लाचार होकर उसे बुलाना ही पड़ता है।

गाँव से थोड़ी दूर पर एक नदी बहती है। सरकार ने हाल ही में एक नहर की व्यवस्था की, जिससे गाँव के खेतों को पानी मिलने लगा। इससे बंजर भूमि उपजाऊ हो गयी। बाहर से लोग इस गाँव में आकर बसने लगे। आबादी बढ़ती गयी। रोज ब रोज़ की ज़रूरतें बढ़ने लगीं। इसलिए चार और घोड़ा-गाड़ियाँ गाँव में चलने लगीं।

घमंडी धवन की कमाई कम होने लगी। लोगों को दूसरी घोड़ागाड़ी में चढ़ते देखकर उसका मन दुखने लगा। कभी-कभी उसे भूखा रहना पड़ता था।

धवन के मन की शांति जाती रही। एक दिन वह नदी के किनारे स्थित शिव के मंदिर में गया। उस समय मंदिर के पुजारी भक्तों से कहने लगे, ''सबको चाहिए कि वे जीव-जंतुओं के प्रति करुणा भाव रखें। सबके साथ सद्व्यवहार करें। जो भी काम करें, श्रद्धा से करें। परिश्रम करें। ऐसा करने पर कोई भी अपने कार्य में अवश्य सफल होगा।''

धवन ने भी पुजारी की ये बातें ध्यान से सुनीं। वे आगे और क्या-क्या कहनेवाले हैं, यह सुनने के लिए वह भक्तों के बीच में आकर खड़ा हो गया।

पुजारी भक्तों को संबोधित करते हुए कहने लगे, ''मंदिर में जो आते हैं, भगवान के दर्शन कर लेने के बाद उन्हें चाहिए कि वे गुड़ का छोटा टुकड़ा ही सही, चींटियों को खिलायें।

- साइ कुमार -

इससे पुण्य मिलता है और साथ ही जीव-जंतुओं की रक्षा भी होती है। खाना खाने के पहले हमें चाहिए कि हम अन्न का एक कौर ही सही, दीवार पर रख दें, जिसे कौआ खाकर अपनी भूख मिटा सके। ऐसी दयालुता का फल अच्छा होता है। चींटियों को, कौवों को या अन्य किन्हीं भी प्राणियों को जब हम खिलाते हैं तब वे मन ही मन हमारा शुभ चाहने लगते हैं। अतः मानव को चाहिए कि वह सभी प्राणियों के साथ दया-करुणा के साथ पेश आये।''

पुजारी की कही गुड़ की बात धवन को बहुत ही सही लगी। वह जल्दी-जल्दी किराने की दुकान में गया और उसने दस पैसों का गुड़ खरीदा और शिव मंदिर की सीढ़ियों पर उसे रख दिया।

दूसरे ही क्षण उसने पीछे से एक आवाज़ सुनी, ''अरे धवन, थोड़ा रुक जा।''

उसने मुड़कर देखा कि आवाज़ देनेवाले कोई और नहीं, स्वयं ग्रामाधिकारी शिवशंकर हैं। उन्होंने धवन से कहा, ''अच्छा हुआ, तुम सही समय पर मिल गये। अपनी छोटी बेटी को अपने गाँव के पास ही के शिवपुर की उच्च पाठशाला में पढ़ाना चाहता हूँ। तुम्हें हर रोज़ उसे अपनी घोड़ा-गाड़ी में वहाँ ले जाना होगा और वापस ले आना होगा। इसके लिए तुम्हें हर महीने दो सौ रुपये दूँगा। लंबे अर्से से तुम गाँव में घोड़ा-गाड़ी चला रहे हो, इसीलिए तुम्हें मैंने यह काम सौंपा। बोलो, यह काम करोगे?''

ग्रामाधिकारी शिवशंकर की बातों ने धवन को आश्चर्य में डाल दिया। साथ ही वह बेहद खुश भी हुआ। उसने सोचा तक नहीं था कि ऐसा भी हो सकता है। गुड़ का एक टुकड़ा इतनी जल्दी ऐसा चमत्कार करेगा, इसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी। उसका घमंड अब जाता रहा और उसने विनयपूर्वक कहा, ''ज़रूर साहब, ज़रूर।''

उस दिन से लेकर चींटियों और कौओं को ही नहीं, भूख से तड़पनेवाले उन कुत्तों को भी खिलाने लगा, जो उसके घर के सामने आकर खड़े हो जाते थे। गाँववालों ने धवल में आये इस परिवर्तन को देखा और उन्हें यह जानने में देर नहीं लगी कि अब धवन घमंडी नहीं रहा। वे अब अपने घरों में कोई शुभकार्य हो तो उनमें भी भाग लेने के लिए उसे निमंत्रित करने लगे।
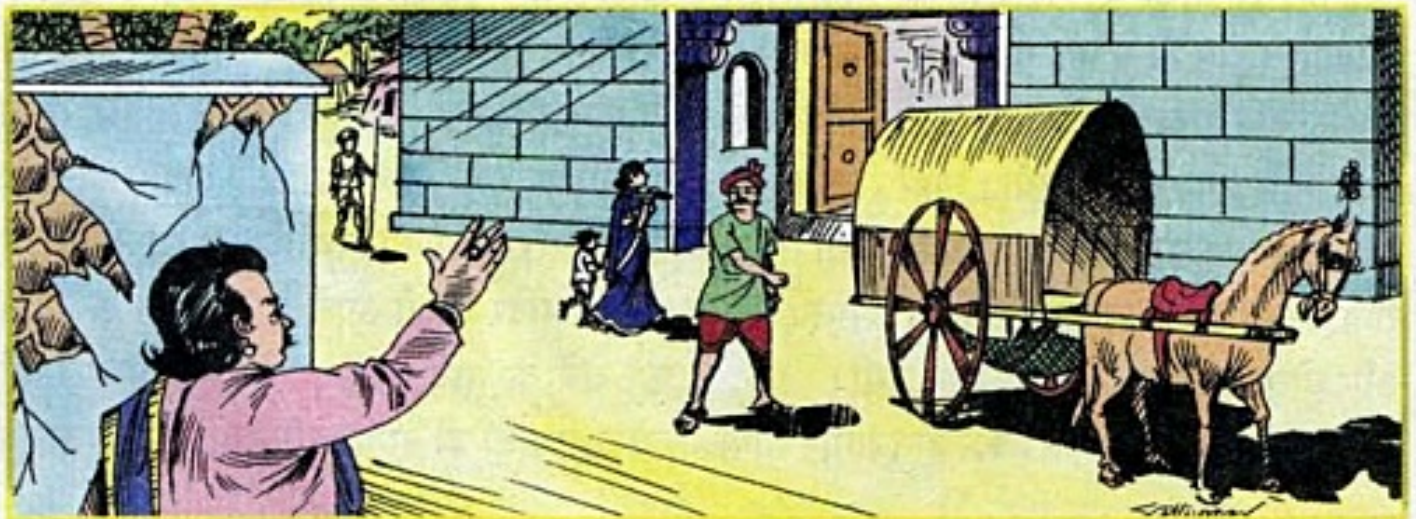
माया सरोवर

11

(जयशील को लगा कि माया सरोवर पहुँचने के लिए सर्पनख की सहायता की ज़रूरत है। सर्पनख को अपने भाई का पता लगाने की जल्दी थी। नरवानर के मालिक को देखते ही वह जलाश्व पर सवार होकर उसका पीछा करने लगा। भागे जा रहे कृपाणजित्त को मृत्युवृक्ष की टहनी ने अपने पाश में जकड़ लिया।) - इसके बाद

मृत्युवृक्ष की टहनी ने जैसे ही कृपाणजित्त को अपने पाश में जकड़कर उसे ऊपर उठाया, वैसे ही उसी के पास ही की दो टहनियों में से एक ने उसके कंधे को और दूसरी ने उसके हाथ को कसकर पकड़ लिया और तुरंत ऊपर खींचा। कृपाणजित्त अपने को उनसे छुड़ाने की भरसक कोशिश करने लगा। वह ''बचाओ, बचाओ'' कहकर चिल्लाता रहा।

बौने उसका आर्तनाद सुन रहे थे, लेकिन उसे बचाने कोई भी आगे नहीं आया। वे मृत्युवृक्ष के पास आने से डर रहे थे। पर जलाश्व को वे पकड़े हुए थे, जिससे वह भाग न जाए।

जयशील और सिद्धसाधक थोड़ी ही दूर पर के एक टीले पर खड़े थे। वे तुरंत नीचे उतरे और दौड़ते हुए मृत्युवृक्ष के निकट आये। उनके वहाँ पहुँचने के पहले ही सर्पनख जलाश्व पर सवार होकर वहाँ आया और कहने लगा, ''यही एकमात्र आदमी जानता है कि मेरा भाई कहाँ

को सिद्धसाधक ने पकड़ लिया और कहा, ''अरे, ओ पानी के पक्षी, तुम्हारे दुस्साहस की वजह से हम तुम्हें खो बैठते और माया सरोवर का पता बतानेवाला कोई नहीं रह जाता।''

सर्पनख ने अपने को संभालकर कराहते हुए कहा, ''मैं जानता हूँ, माया सर्वेश्वर अवश्य मेरी रक्षा करेंगे। वे अपने सेवकों को कभी भी मरने नहीं देंगे।''

सिद्धसाधक नाराज़ होते हुए बोला, ''बेवकूफ़ कहीं के। अब तुम्हें तुम्हारे भगवान ने बचाया?''

''वे खुद यहाँ भले न आये हों, पर तुम दोनों पर वे छा गये और तुम दोनों के द्वारा मुझे बचा लिया।'' कहते हुए उसने सिर उठाकर मृत्युवृक्ष को देखा। वहाँ टहनियों में लटकते हुए कृपाणजित्त को देखकर उसने कहा, ''लगता है, इसकी मौत निश्चित है। यही एक आदमी है, जो जानता है कि मेरा भाई सर्पस्वर कहाँ है। इसे ज़रूर बचाना चाहिए।'' कहता हुआ वह वृक्ष की ओर दौड़ने लगा।

तब जयशील ने उसका कंधा पकड़कर उसे रोक दिया। फिर उसने वहाँ खड़े बौनों से कहा, ''तुम्हारा सेनाध्यक्ष कहाँ है? लगता है कि इसका मानसिक संतुलन खो गया। इसे ले जाकर नदी में डुबो देना और किनारे पर सुखा देना।''

बौनों ने जब सर्पनख को पकड़ लिया तब वह ज़ोर से चिल्लाते हुए कहने लगा, ''मैं कोई पागल नही हूँ। बिलकुल ठीक हूँ। मैं सब कुछ

है। वह मरने जा रहा है। उसे बचाना चाहिये।'' कहते हुए उसने एक टहनी को अपनी तलवार से काट डाला।

इससे मृत्युवृक्ष के तने से लेकर अंतिम टहनियाँ तक हिलने लगीं। फिर उन्होंने एक हल्की-सी कराह सुनी। दूसरे ही क्षण अंगूठे भर की एक टहनी साँप की तरह बल खाती हुई नीचे उतरी और सर्पनख के गले के चारों ओर लिपट गयी। तब सर्पनख चिल्लाने लगा, ''हे माया सर्वेश्वर, मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो।'' जलाश्व घबरा गया और भागने लगा।

जयशील और सिद्धसाधक दौड़ते हुए वहाँ पहुँचे। सिद्धसाधक सर्पनख के दोनों पैर पकड़कर खींचने लगा। तब जयशील ने तलवार से उस टहनी को काटा डाला जो सर्पनख के गले के चारों ओर लिपटी हुई थी। गिरते हुए सर्पनख

जानता हूँ। ये बौने लोग हैं, आप जयशील और सिद्धसाधक हैं। वह मगरमच्छों की नदी है।''

''अरे पानी के पक्षी, अब चुप हो जा। तुम्हें घड़ियालों का आहार बनाने जा रहे हैं।'' कहते हुए बौने उसे पानी की ओर खींचकर ले गये। उसी समय बौनों की रानी रथ में बैठकर वहाँ आयी।

गडिकोंडा और उसके साथी हाथ जोड़े रथ के पीछे खड़े हो गये। रानी को देखते ही जयशील ने कहा, ''उस कृपाणजित्त को मृत्युवृक्ष ने खा लिया, जो अपने स्वार्थ के लिए तुम्हारी जाति के लोगों में फूट डालना चाहता था। अब आप लोग आराम से ज़िन्दगी गुज़ार सकते हैं। हम लोग भी अपना काम पूरा करने चले जायेंगे। परंतु जाने से पहले इस मृत्युवृक्ष को जला डालना चाहते हैं। इसने बहुत लोगों की जानें लीं।''

''ऐसा ही कीजिए। आपने हमारी मदद की, इसके लिए हम आपके कृतज्ञ हैं। नरवानर का मालिक तो मर गया, पर वह नरवानर जंगल में ही कहीं भटकता होगा। हमें सावधान रहना होगा। पता नहीं, वह हम पर कब वार कर बैठे।'' रानी ने लंबी साँस खींचते हुए कहा।

''जलाश्व पर बैठकर आया सर्पनख हमें मिल गया। उसके भाई को वह नरवानर उठाकर ले गया। हमें माया सरोवर का पता लगाने के लिए सर्पनख की मदद की ज़रूरत है। उसके भाई को हम ढूँढ़ने जा रहे हैं। इस प्रयत्न में नरवानर

मिल गया तो उसे मारकर ही रहेंगे।'' जयशील ने आश्वासन देते हुए कहा।

''मैं उसे मारने नहीं दूँगा। उसे पालतू बनाऊँगा और उस पर सवारी करूँगा। अच्छा बताओ, आग कहाँ है? इस वृक्ष को जलाकर राख बनानी है,'' कहते हुए सिद्धसाधक ने इर्द-गिर्द देखा।

चार-पाँच बौने जलती मशालें लेकर आगे आये। सिद्धसाधक ने एक मशाल ली और कहा, ''यह मनुष्यों को खा जानेवाला वृक्ष है। इसमें अवश्य ही माँस और चर्बी के पदार्थ होते होंगे। इन मशालों को उसपर फेंकेंगे। देखते हैं, क्या होता है,'' यह कहकर सिद्धसाधक मशाल उसपर फेंकने ही वाला था कि इतने में ज़ोर से कोई चिल्ला पड़ा, ''ठहरो पापी, इस मृत्युवृक्ष को क्या जला डालने का

इरादा है? यह अंसभव है।''

जयशील और सिद्धसाधक ने मुड़कर देखा। वहाँ एक बौना खड़ा था जो बाकी बौनों से थोड़ा लंबा था। उसके गले में गुरियों की माला और कंधे पर एक कुल्हाड़ी थी। उसके बाल बिखरे हुए थे। वह उछलता-कूदता हुआ जयशील और साधक के पास आया।

सिद्धसाधक ने अपने शूल से उसका स्पर्श करते हुए पूछा, ''कौन हो तुम? मुझ जैसे महाकाली के भक्त को पापी कहते हो? इतना साहस!''

वह बौना निर्भय होकर बोला, ''मैं चिरंजीव मृत्युवृक्ष का पुजारी हूँ। पहले जब आपने तलवार चलायी, तब वृक्ष धीरे से कराह उठा था। क्या उसकी कराह आपको सुनायी पड़ी?''

जयशील ने पूछा, ''वृक्ष के पीछे छिपकर तुम्हीं ने यें किया था। है न? सच बोलो।'' यों कहकर उसने उसका गला पकड़ लिया।

बौने पुजारी ने हिचकिचाये बिना कहा, ''हाँ, मैंने ही कराहा था। पर ऐसा करने का आदेश दिया है, वृक्ष पर हावी मृत्युदेवी ने। मैं उसका पुजारी हूँ, सेवक हूँ।''

जयशील ने सिद्धसाधक की ओर यों देखा, मानों वह जानना चाहता था कि अब इसके साथ क्या बर्ताव किया जाए। साधक ने पुजारी के कंधे पर से कुल्हाड़ी खींच ली और कहा, ''अरे ओ चालाक पुजारी, आज से मृत्युवृक्ष नहीं होगा। उसे हम जला डालेंगे। समझो, पुजारी की तुम्हारी नौकरी भी गयी। अब से इस कुल्हाड़ी से जंगल की लकड़ियाँ काटो और ज़िन्दगी गुज़ारो। नादान लोगों की जानें लेनेवाला यह मृत्युवृक्ष जलकर राख हो जायेगा।'' यह कहकर जलती हुई मशाल को साधक वृक्ष पर फेंकने ही वाला था कि पुजारी ने झट से उसका हाथ पकड़ लिया।

''अरे दुष्ट, महाकाल के इतने बड़े भक्त को छूने का साहस! छोड़ो मेरा हाथ!'' कहते हुए साधक ने अपना हाथ छुडा दिया।

बौना पुजारी रोता हुआ कहने लगा, ''मेरी बातों का विश्वास कीजिए। यह मृत्युवृक्ष दुष्टों और दग़ाबाजों को ही खाता है। धर्मात्माओं का कुछ भी अहित नहीं करता।''

तब जयशील ने पुजारी को पकड़ लिया और कठोर स्वर में कहा, ''तो क्या तुम अधर्मी नहीं

हो? तुमने क्या कभी पाप नहीं किया? लोगों को धोखा नहीं दिया?''

''इसमें क्या आपको कोई संदेह है?'' पुजारी ने पूछा।

जैसे ही पुजारी ने यों कहा, जयशील ने उसे ऊपर उठाया और मृत्युवृक्ष पर फेंकने ही वाला था कि पुजारी चिल्ला पड़ा और कहने लगा, ''महाशय, मुझे छोड़ दीजिए। मुझे मृत्यु की गोद में मत सुलाइये। मुझपर दया कीजिए।''

जयशील ने हँसते हुए उसे ज़मीन पर खड़ा कर दिया और साधक से कहा, ''अब हमें यहाँ अपना समय व्यर्थ करना नहीं चाहिए। मृत्युवृक्ष में आग लगा दो।''

सिद्धसाधक ने जलती मशालें वृक्ष की शाखाओं पर फेंक दीं। बस, देखते-देखते वृक्ष जलकर राख हो गया।

जयशील ने जलते हुए कृपाणजित्त के शव को दिखाते हुए कहा, ''यह अमरावती नगर के राजा के अश्वदल का सरदार था। एक घर में जब जूआ खेला जा रहा था तभी वहाँ हम दोनों की मुलाक़ात हो गयी थी। बातों-बातों में हम दोनों में तू तू मैं मैं हो गया। उस झगड़े की बजह से ही मुझे जंगल में शरण लेनी पड़ी। दुष्ट को कभी भी अच्छी मौत नहीं मिलती। द्यूतगृह में देवशर्मा नामक मेरा एक मित्र रहा करता था। पता नहीं, वह कहाँ चला गया। कहाँ मारा-मारा घूम-फिर रहा होगा।''

''हमें माया सरोवर जाना है, हिरण्यपुर के

राजा की संतान को छुड़ाना है। इसमें तो समय लगेगा ही। इस बीच हो सकता है, तुम्हारा दोस्त कहीं मिल जाए।'' सिद्धसाधक ने कहा।

''तुमने ठीक कहा साधक। मुझे भी लगता है, वह ज़रूर मिलेगा। सर्पनख कहाँ है?'' जयशील ने इधर-उधर देखते हुए पूछा।

सर्पनख जलाश्व पर बैठकर दूर के पहाड़ों को देख रहा था और सोचता जा रहा था। जयशील ने दूसरे जलाश्व को दिखाते हुए साधक से कहा, ''हम क्यों बेकार इस जलाश्व को यहाँ छोड़ें। हम दोनों में से कोई इसका उपयोग कर सकता है।''

''जयशील, वह जलाश्व तुम्हारा ही है। मैं पैदल तुम्हारे पीछे-पीछे चलूँगा। वह भयंकर नरवानर मिल जाए तो मैं उसे अपनी सवारी बनाऊँगा।'' साधक ने कहा।

जयशील ने कहा, "मैं जानता हूँ कि ऐसा करने से तुम झिझकोगे भी नहीं। ठीक है, जो जी चाहे, कर लेना। क्या अब हम यहाँ से निकलें?" फिर उसने बौनों की रानी की ओर मुड़कर कहा, "तुम्हारा ज़बरदस्त दुश्मन कृपाणजित्त अब नहीं रहा। तुम लोगों को अब डरने की कोई ज़रूरत नहीं। सुख व शांति से जीवन बिताना। अच्छा, अब हम चलते हैं।"

जयशील जलाश्व पर सवार हो गया और उसके पीछे-पीछे सिद्धसाधक पैदल चलने लगा। सब बौनों ने जयजयकार की। उनकी जयजयकार को सुनते ही सर्पनख मुड़ा और जाते हुए जयशील व साधक को देख लिया। फिर चिल्लाते हुए वह कहने लगा, "रुक जाओ। अपने भाई को ढूँढ़ना है। मैं भी तुम लोगों के साथ आऊँगा।" यह कहकर वह अपने घोड़े को दौड़ाता हुआ उनके पास आया।

जयशील ने उसे ग़ौर से देखा और कहा, "लगता है, नदी के स्नान ने तुम्हें ठीक कर दिया है। अब अपना रास्ता नापो। जहाँ जाना है, जाओ। हम माया सरोवर का पता लगानेवाले हैं। वहाँ पहुँचकर उसके मालिक के शरीर के टुकड़े-टुकड़े करेंगे और जीव-जंतुओं को खिला देंगे।"

यह सुनकर सर्पनख के चेहरे पर उदासी छा गयी, पर वह मौन रहा। फिर तीनों आधे घंटे के अंदर अरण्य प्रांत में आ गये। पहले जयशील और सिद्धसाधक जिस जल-प्रपात से होते हुए गिरे, उस प्रदेश में पहुँचे।

जयशील तब का अनुभव सर्पनख को बताने ही वाला था कि इतने में सर्पनख ने अपना हाथ उठाकर दूर की एक पहाड़ी गुफ़ा को दिखाते हुए कहा, "उस गुफ़ा से बाहर जो झांककर देख रहा है, वह कहीं भयंकर नरवानर तो नहीं?"

"हाँ, हाँ, वह नरवानर ही है।" जयशील ने उसके संदेह की निवृत्ति की। दूसरे ही क्षण ज़ोर से चिंघाड़ता हुआ नरवानर गुफ़ा से बाहर आया। मकरकेतु की सवारी जलाश्व भी गुफ़ा के बाहर आया और नरवानर को सूँड से कसकर पकड़ लिया। *(सशेष)*

भानुमंत की कहानी

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा और कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् वह श्मशान की ओर बढ़ता गया। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, "तुम्हारे हठ को देखते हुए लगता है कि तुम्हें अपनी विजय में दृढ़ विश्वास है। इसी कारण भयंकर कठिनाइयों का भी सामना करने में तुम हिचकिचा नहीं रहे हो। श्मशान में क्रूर जंतु हैं, भूत-प्रेत हैं, उनकी भी तुम्हें परवाह नहीं है। परंतु तुम इस सत्य से अनभिज्ञ हो कि विश्वास हमेशा फलदायक नहीं होता। बहुत पहले की बात है। जंगली जाति का एक युवक था,

जिसमें तुम्हारी ही तरह अटल आत्म विश्वास था। उसने राजा से भी टक्कर ली और वह विजयी भी हुआ। परंतु दुख की बात तो यह है कि विजय प्राप्त करने के बाद भी वह उसके लाभ से वंचित रहा। उस युवक की कहानी शायद तुम्हारी आँखें खोल सकेंगी। अपनी थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी मुझसे सुनो।'' फिर बेताल उस युवक की कहानी यों सुनाने लगा :

विंध्या के अरण्य क्षेत्र में छोटे-छोटे राज्य हुआ करते थे। उनमें से शोणपुरि राज्य भी एक था। उस राज्य के राजा की किसी रोग से अकाल मृत्यु हो गई। भानुमंत उसका एकलौता पुत्र था। पिता की मृत्यु के कारण उसे कम उम्र में ही राज्य का भार संभालना पड़ा। यद्यपि वह कम उम्र का था, पर था बड़ा ही बुद्धिमान। राजनीति के दांव-पेंचों से भी वह परिचित था। अल्प अवधि में ही शासन संबंधी विषयों व देश की परिस्थितियों को वह पूर्ण रूप से समझ गया और सुयोग्य मंत्रियों की सलाह से राज्य का शासन भली-भाँति चलाने लगा।

एक बार राज्य के एक कर्मचारी ने भानुमंत से कहा, ''हमारे देश के पूरबी और उत्तरी क्षेत्र दोनों विंध्या अरण्य के अन्तर्गत हैं और यह आप जानते भी हैं। मैं उन्हीं क्षेत्रों का हूँ। आपके पिताश्री की कृपा से मुझे आस्थान में नौकरी मिली है। मैंने जिन अरण्य क्षेत्रों की बात की, उनमें से पूर्वी अरण्य अधिक सुंदर व मनमोहक है। वहाँ प्राकृतिक सौंदर्य पग-पग पर बिछा हुआ है। इतना ही नहीं, वहाँ जितने बन्य प्राणी दिखते हैं, कहीं और देखने को नहीं मिलते।

भानुमंत को आखेट में बड़ी ही रुचि थी। यह सुनते ही पूर्वी अरण्य जाने की उसकी तीव्र इच्छा हुई। उसने शासन-भार मंत्रियों को सौंपा और चंद लोगों को अपने साथ लेकर अरण्य की ओर निकल पड़ा।

वहाँ पहुँचने के बाद बन्य प्राणियों के साथ उसने जंगली जाति के कितने ही लोगों को भी देखा। उन लोगों का परिचय देते हुए केवल नामक एक व्यक्ति ने कहा, ''ये लक्ष्मण जाति के लोग हैं। अन्य जनजातियों से ये अधिक शिक्षित हैं। कहा जाता है कि श्रीराम जब सीता की खोज में निकले, तब इसी अरण्य मार्ग से उन्होंने यात्रा की थी। तब यहाँ की जनजातियों ने श्रद्धा व भक्तिपूर्वक उनकी सेवा की। श्रीराम

ने आशीर्वाद देते हुए उनसे कहा था कि तुम सब लोग लक्ष्मण जैसे वीर, धीर व कर्तव्यपरायण बनो। तभी से इनकी जाति का नाम लक्ष्मण जाति पड़ा। इस जाति की एक और विशेषता है। इस जंगल में क्रूर जंतुओं की भरमार है, इसलिए यहाँ के पुरुष ही नहीं बल्कि स्त्रियाँ भी आखेट में निपुण हैं, तीर चलाने में दक्ष हैं।''

भानुमंत ने बड़े ही ध्यान से केवल की बातें सुनीं। इसके चंद ही मिनटों के बाद उसने एक जंगली बारहसिंगा पर तीर चलाया। पर बारहसिंगा अपने को तीर के वार से बचाता हुआ आगे निकल गया। तभी एक अन्य तीर उसके शरीर में जा लगा। बारहसिंगा कराहता हुआ ज़मीन पर गिर गया।

अपनी आँखों के सामने घटी इस अद्भुत घटना को देख भानुमंत आश्चर्य में डूब गया। इतने में एक काले घोड़े पर सवार लक्ष्मण जाति की एक युवती बारहसिंगा के पास आयी।

उस युवती को देखकर भानुमंत और भी चकित रह गया। पारंपरिक परिधान में उसका सौंदर्य वर्णनातीत था।

घोड़े से उतरकर युवती ने भानुमंत को देखा। पहले तो वह घबरा गयी, पर अपने को संभालते हुए उसने उसे विनयपूर्वक नमस्कार किया। बाद में उन दोनों की बातचीत से पता चला कि वह लक्ष्मण जाति के सरदार की बेटी है और उसका नाम चंपा है। उसके आमंत्रण पर वह उसके घर गया।

भानुमंत के आगमन पर चंपा का पिता बेहद खुश हुआ और दो दिन वहीं ठहरने के लिए उससे आग्रह किया। मजबूरन उसे दो दिनों तक वहीं रह जाना पड़ा। इन दो दिनों में चंपा के सुमधुर गान

ने, उसके मृदु स्वभाव ने, उसकी बुद्धिमानी ने भानुमंत को मोहित कर लिया। उसने उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा।

चंपा ने सिर झुकाकर कहा, ''प्रभु, भगवान की दया से आप मेरे मन की इच्छा जान गये। सचमुच यह मेरा सौभाग्य है। पर मेरी फूफी का बेटा राम मुझसे शादी करने पर डटा हुआ है। सबको यह शादी पसंद है, परंतु मुझे नहीं। पर हमारी प्रथा के अनुसार किसी कन्या से एक से अधिक लोग शादी करना चाहते हों तो उनमें प्रतियोगिता चलायी जाती है। हमारे राम मंदिर में एक बहुत ही प्राचीन धनुष है। जो इस धनुष में अनायास डोरी चढ़ाता हो, निशाना बांधता हो, वही उस कन्या से विवाह रचा सकता है। आप भी मुझसे विवाह करना चाहते हैं, इसलिए आपमें और राम में स्पर्धा आवश्यक है। वैसे तो राम कमज़ोर है, उसपर वह विकलांग भी है, फिर भी देखना है कि दैव निर्णय क्या होगा?''

दूसरे दिन प्रतियोगिता का प्रबंध हुआ। सब लोग आश्चर्य भरे नेत्रों से देख रहे थे। राम ने धनुष को विनयपूर्वक प्रणाम किया, फिर झुका और धनुष को ऊपर उठाकर उसमें अनायास डोरी बाँध दी। चंपा ने निराशा-भरे नेत्रों से भानुमंत को देखा।

मुस्कुराते हुए भानुमंत राम की ओर बढ़ा और बोला, ''राम, मैं जानता था कि विजय तुम्हारी ही होगी। पर, बस एक बार, उस तरफ़ देखो। जिसे पाने के लिए तुमने यह विजय साधी, क्या वह तुम्हारी इस विजय पर संतुष्ट है? ध्यान से देखना।''

राम ने मुड़कर चंपा को देखा। उसे उसके मुख पर व्याप्त गहरी चिंता की रेखाएँ स्पष्ट दिखायी पड़ीं। बस, वह ठंडा पड़ गया उसका सारा उत्साह जाता रहा। वह धीरे से भानुमंत के पास आया और मंद स्वर में कहने लगा, ''मैं अपनी ग़लती महसूस कर रहा हूँ। मुझे माफ़ कीजिए और हमारी चंपा को अपनी रानी बना लीजिए।''

भानुमंत ने उसके कंधे पर हाथ रखकर मुस्कुराते हुए चंपा के पिता से कहा, ''यह कलियुग है। त्रेतायुग की महिमाओं का स्मरण कर पुरानी परम्परा में विश्वास रखना उचित नहीं है। इससे किसी की भी भलाई नहीं होगी। यह ज़रूरी है कि आप अपने अनुचरों में समयानुकूल आचार-विचार को प्रोत्साहन दें और उन्हें सही मार्ग दिखायें। अब से ही सही, वर की योग्यता व उसके

अच्छे-बुरे गुणों को परख कर कन्या का विवाह करायें।'' कहते हुए उसने धनुष को उठाकर दूर फेंक दिया।

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा विक्रमार्क से कहा, ''राजन्! भानुमंत की व्यवहार-शैली में अपने राजा होने का दर्प स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। राम विकलांग था, पर उसमें आत्मविश्वास कूटकूटकर भरा हुआ था। इसी आत्म विश्वास के बल पर उसने विजय भी पायी। पर भानुमंत ने उसकी वाहवाही नहीं की। मैं तो समझता हूँ कि राम से कोई ग़लती नहीं हुई। फिर भी उसने अपनी गलती स्वीकार की। ऐसा क्यों? क्या इसलिए कि वह राजा से डरता है? मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''भानुमंत ने ठीक ही कहा कि लक्ष्मण जाति के आचार-विचार अनुचित हैं। कन्या की इच्छा जाने बिना विवाह रचाना अन्याय व अनुचित है। ऐसी कुप्रथा को वह आदेश देकर मिटा सकता था। पर ऐसा न करके उसने प्रत्यक्ष दिखा दिया कि उसके कारण कन्याओं के जीवन के साथ कितना घोर अन्याय होता है। इसमें भानुमंत का बडप्पन ही नज़र आता है। उसका व्यवहार सत्य और न्याय पर आधारित है। इसमें उसका अहंभाव रत्ती भर भी दिखायी नहीं देता। अब राम की बात लो। वह जानता है कि चंपा उसे पसंद नहीं करती। फिर भी उसकी इच्छा-अनिच्छा की परवाह किये बिना उसने उसे पाने के लिए स्पर्द्धा में विजय प्राप्त की। भानुमंत ने मृदु स्वर में जो स्पष्ट बातें कहीं, उनसे वह जान गया कि मुझसे ग़लती हो गयी। इसीलिए उसने क्षमा भी माँगी। राजा का एकमात्र लक्ष्य था, उस जाति में व्याप्त कुप्रथा का अंत करना। वह अपने लक्ष्य में सफल भी हुआ। राम का क्षमा माँगना इसका प्रमाण है। लक्ष्मण जाति के लोगों में उसके शक्ति-सामर्थ्य को लेकर कोई संदेह न हो, इसी लिए उसने धनुष को अनायास उठाकर दूर फेंक दिया।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार - लक्ष्मी गायत्री की रचना)

भारत की पौराणिक कथाएँ – ८

एक विलक्षण बालक – जिसने अपने पिता को मुक्त कराया

कोहर एक बड़े ज्ञानी मुनि थे। वे नित्यप्रति प्रातःकाल नदी में स्नान कर वेद-मंत्रोच्चार किया करते थे। वे स्तोत्रों का वाचन इतने मधुर स्वर में करते थे कि पथिक खड़े होकर सुनने लग जाते। श्रोताओं में उनकी पत्नी सुमति भी थी, जो उनके गुरु प्रसिद्ध ऋषि उद्दालक की पुत्री थी।

एक दिन मुनि को एक कोमल उद्‌गार सुनाई पड़ा, जो, मुनि को लगा कि उसके वाचन की प्रशस्ति में व्यक्त किया गया है। यह किसका उद्‌गार था? उसे पता नहीं चला। हो सकता है यह उद्‌गार उसकी कुटिया से होकर जानेवाले किसी पथिक का हो। वहाँ आसपास वेद के अनेक विद्वान और प्रशंसक रहते थे।

कोहर मुनि को दो-तीन बार और वह रहस्यमय स्वर सुनाई पड़ा लेकिन उसने उसकी तब तक परवाह नहीं की जब तक उस आवाज ने टिप्पणी नहीं की। उसने उसके वाचन में एक पंक्ति का संशोधन किया, क्योंकि उसके उच्चारण में दोष था।

उसने खड़ा होकर अपने कक्ष के गवाक्ष से बाहर झाँका। उसके कुटीर के बाहर कोई नहीं था। उसने इधर-उधर देखा लेकिन उसकी पत्नी सुमति को छोड़कर आसपास उतनी दूरी तक अन्य कोई नहीं था जहाँ से आवाज सुनाई पड़ सके।

"अभी कौन बोला? तुम्हारा नाम क्या है? तुम किधर हो?" मुनि ने प्रश्न किया। लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। उसने सात बार प्रश्न को दुहराया लेकिन व्यर्थ! स्वभावतः वह क्रोधित हो उठा।

"तुम इतने वक्र क्यों हो कि मेरा संशोधन करो और अपना परिचय न दो। क्या तुम मानव हो या अलौकिक प्राणी? तुम जो भी हो, क्योंकि तुमने मेरे आठ बार प्रश्न करने पर भी उत्तर नहीं दिया, मैं तुम्हें शाप देता हूँ कि तुम शरीर के आठ स्थान से वक्र दिखाई दो।"

उसके बाद शीघ्र ही वे राजा जनक के दरबार में चले गये। इन्हें कुछ धन की आवश्यकता थी और वे राजा से सहायता के लिए अनुरोध करना चाहते थे। राज सभा में पहुँचने पर उसने देखा कि एक विख्यात पंडित वंदी किसी दार्शनिक समस्या पर वाद-विवाद के लिए अनेक विद्वानों को ललकार रहा है। वंदी ने एक असामान्य शर्त रखी थी। शर्त यह थी कि जो भी विद्वान बंदी को हरा देगा, उसे प्रचुर पुरस्कार दिया जायेगा और यदि वह हार जायेगा तब उसे जल के नीचे बने एक प्रकार के कारागार में मृत्युपर्यंत जीवन बिताना पड़ेगा। कोहर को अपने ज्ञान और सामर्थ्य पर इतना विश्वास था कि उसने चुनौती स्वीकार कर ली। दुर्भाग्यवश बंदी के सामने उसे धूल चाटनी पड़ी। कोहर को जलतल कारागार में भेज दिया गया।

मुनि के जनक की राजसभा में जाने के पश्चात सुमति ने एक बालक को जन्म दिया। हाय ! वह बालक शारीरिक रूप से वक्र था। कहने की आवश्यकता नहीं है कि वह अपने पिता के नित्यप्रति वेद पाठ को सुनकर बहुत बड़ा ज्ञानी हो गया था। इसी ने, जब वह माँ के गर्भ में ही था, मुनि के अशुद्ध पाठ को संशोधित किया था।

बालक का नाम अष्टावक्र था। सुमति पहले से ही अपने पति के दुर्भाग्य से दुखी थी। अपने बेटे के विकलांग शरीर को देखकर वह और दुखी
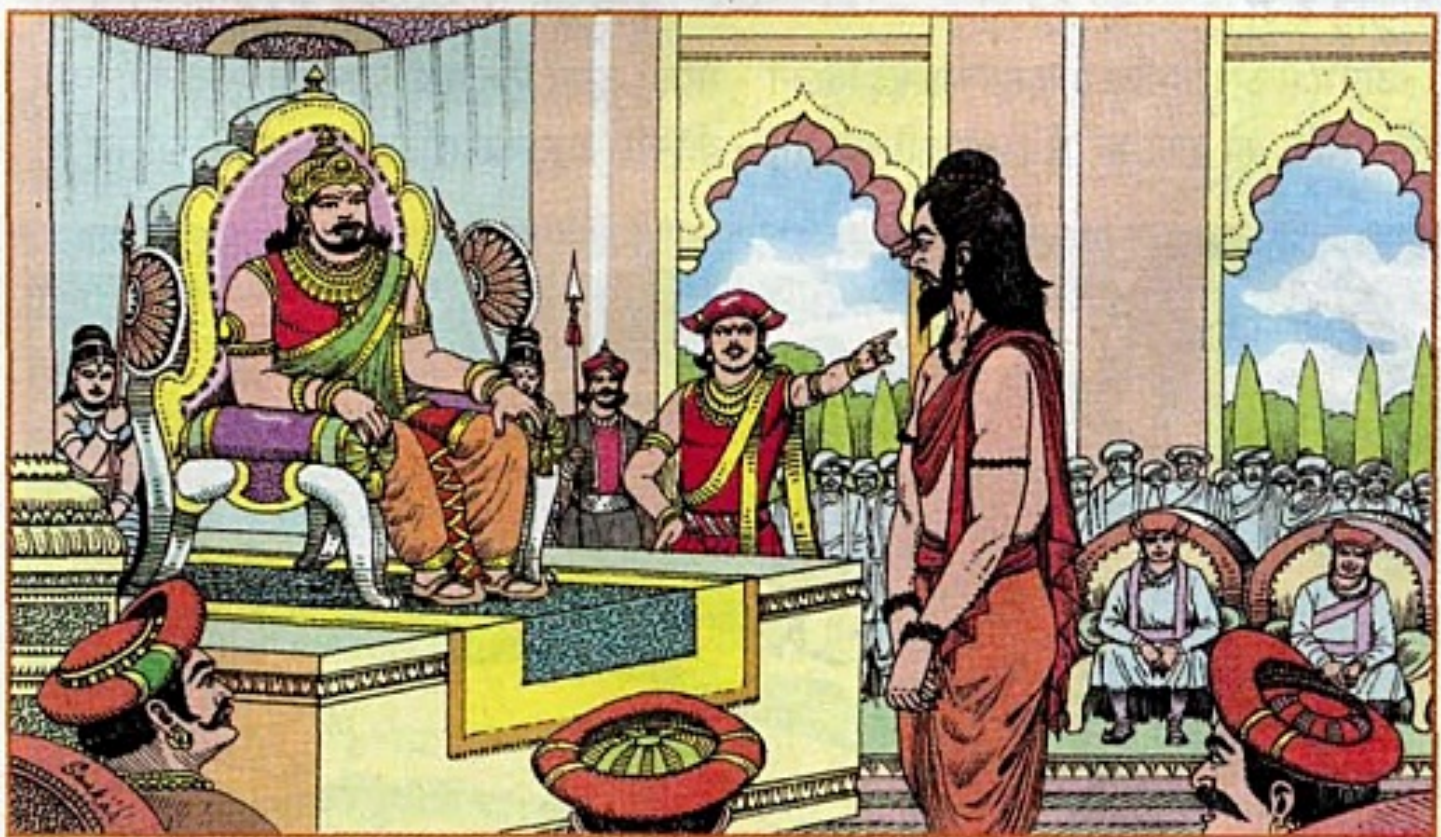
हो गई। लेकिन जैसे-जैसे बालक बड़ा हुआ, उसे उसपर गर्व होने लगा। वैदिक ज्ञान में अष्टावक्र उस क्षेत्र के सभी सुख्यात विद्वानों से आगे बढ़ गया।

अब वह १२ वर्ष का हो चुका था। और राजा जनक की राजसभा में जाने को तैयार था। उसने यह प्रमाणित करने का निश्चय कर लिया था कि अभिमानी वंदी से भी अधिक महान पंडित हैं।

राजा जनक के सभासदों को इस बात पर हँसी आ रही थी कि बालक महानतम पंडित के साथ वाद-विवाद करने को तैयार है। बहुत को तो पूरा विश्वास था कि बालक न केवल शरीर से विकलांग है, बल्कि उसका मन भी विकृत है। लेकिन राजा जनक, जो स्वयं ज्ञानी था, जानता था कि वह बालक विलक्षण प्रतिभा-सम्पन्न है। उसने वंदी के साथ वाद-विवाद के लिए उसे स्वीकृति दे दी।

आरंभ में उस निर्भीक और हास्यास्पद दिखने वाले बालक को क्षण भर में धराशायी कर देने का आत्म विश्वास रखनेवाले वंदी को शीघ्र मालूम हो गया कि उसे बार-बार घेरा जा रहा है। सभा में उपस्थित विद्वन्मंडली बालक की प्रत्युत्पन्नमति और प्रज्ञा पर चकित थी। अन्ततः वंदी ने हार मान ली।

"तुम्हें पुरस्कार में क्या चाहिए?" राजा ने पूछा। "मेरे पिता को अविलम्ब मुक्त कर दिया जाये।" अष्टावक्र ने कहा।

उसके पिता तुरंत मुक्त कर दिये गये। कोहर ने कारागार में सारा समय ध्यान और योग में लगा देने के कारण नयी क्षमताएँ उपलब्ध कर लीं। उन्होंने अपने पुत्र को आशीर्वाद दिया और उसे एक नदी में डुबकी लगाने को कहा। अष्टावक्र ने वैसा ही किया। जब वह नदी से बाहर निकला तब उसकी विकलांगिता दूर हो चुकी थी। अब वह एक सुंदर बालक था।

कालक्रम में अष्टावक्र बहुत विख्यात हो गया। उसने एक गहन ज्ञान की कृति की रचना की जो 'अष्टावक्र संहिता' के नाम से प्रसिद्ध है।

पूर्ण लयबद्ध

जब बरसात धोखा दे दे और सूखा सामने खड़ा हो तो तर्क को ताक पर रख दिया जाता है। लोग वर्षा लाने के निर्दिष्ट अनुष्ठानों का सहारा लेते हैं। उड़ीसा में ग्रामीण लोग 'बेंगई नानी नाचा' अथवा मेढ़क नाच नामक अनुष्ठान करते हैं। उनका विश्वास है कि इससे वर्षा होती है। ग्रामीण एक मेढ़क को पकड़कर पानी के एक घड़े में डाल देते हैं। फिर घड़े को बाँस की एक लाठी के बीचोबीच बाँध दिया जाता है। दो व्यक्ति बाँस के दोनों किनारों को अपने कंधों पर रखकर इसे ले जाते हैं। उनके पीछे-पीछे ग्रामीण और बच्चे भी चलते हैं। यह शोभा यात्रा गाँव के मंदिर पर रुक जाती है जहाँ पूजा-अर्चना की जाती है। फिर मेढ़क को किसी नदी या तालाब में छोड़ दिया जाता है। वर्षा की तलाश में, निस्सन्देह !

मयंग की माया

मछली को भूना गया, ग्रेवी में पकाया गया और खाने के लिए परोस दिया गया। उस भूखे अतिथि के चेहरे की कल्पना कीजिए जब उसने देखा कि प्लेट की ग्रेवी में मछली आराम से तैर रही है। यह तो मयंग के जादूगरों के कारनामों की केवल एक कहानी है जो आसाम के नवगांग जिले का एक गाँव है।

कहा जाता है कि कभी यहाँ भयंकर जादूगर रहा करते थे। और ऐसा आख्यान है कि मध्य युगीन काल में जब आसाम के राज्य पर आक्रमण करने के लिए सेना भेजी जाती थी तब उन्हें हवा में गायब कर दिया जाता था।
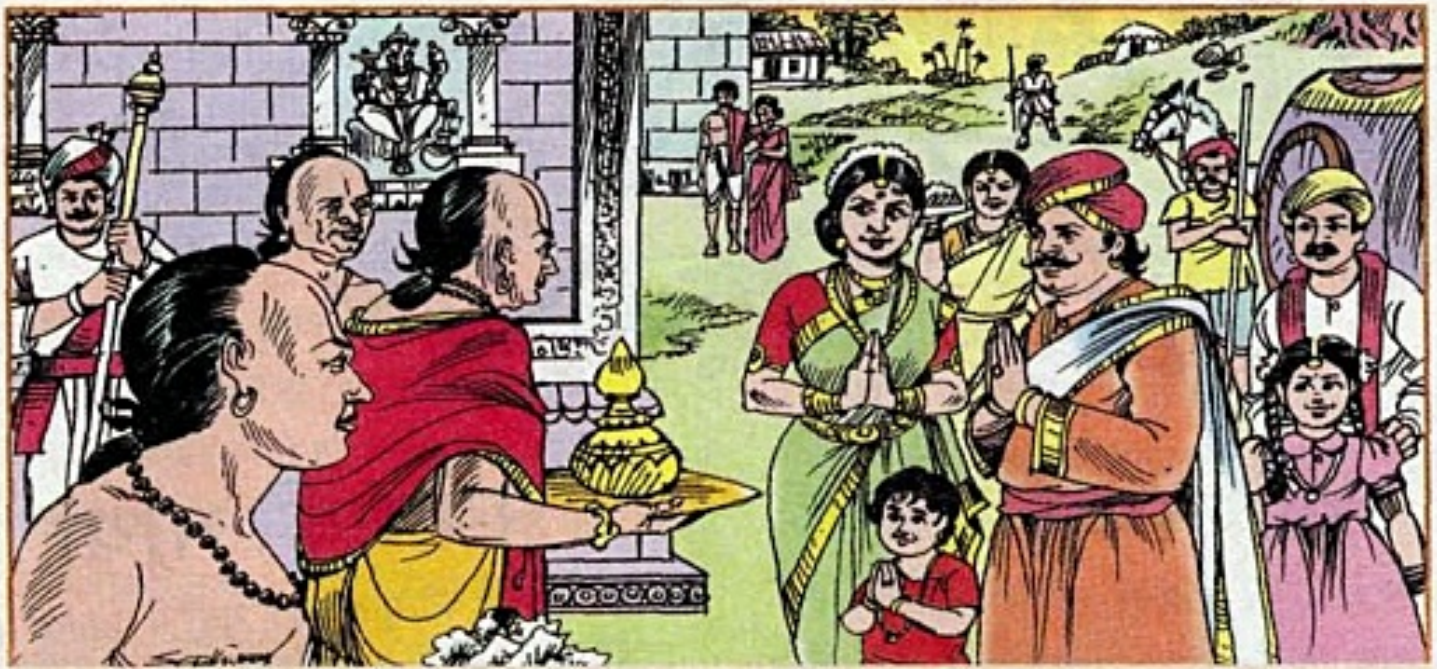
सत्यवान की चाह

भानुमती और भूपति करोड़पति थे। पर लंबे अर्से तक उनकी संतान नहीं हुई। पति-पत्नी इसपर बहुत दुखी रहते थे। पर एक साधु के कथनानुसार उन्होंने बग़ल के गाँव के विश्वनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना की। तब जाकर भानुमती माँ बनी। कल उसके बेटे का तीसरा जन्म-दिनोत्सव है।

''कल पहले हम विश्वनाथ मंदिर जाकर पूजा करेंगे,'' बच्चे को सुलाते हुए भानुमती ने कहा।

''सिर्फ कल ही नहीं, बेटे के हर जन्म-दिनोत्सव पर मंदिर में अवश्य ही पूजा करायेंगे। भगवान का आशीर्वाद पायेंगे,'' भूपति ने कहा।

पति-पत्नी ने सबेरे ही नहा लिया और घोड़ा-गाड़ी द्वारा मंदिर जाने के लिए निकल पड़े। मंदिर में पूर्ण कुम्भ के साथ उनका भव्य स्वागत हुआ। पुत्र का जन्म होते ही भूपति ने भगवान के लिए स्वर्ण किरीट बनवाया था।

जब पूजा का कार्यक्रम चल रहा था तब बाहर से शोरगुल सुनायी पड़ा। माता-पिता पूजा के दौरान आँखें बंद करके जब ध्यान में मग्न थे तब वह बालक बाहर चला गया था। मंदिर के तालाब में कलियों को देखकर वह बहुत ही खुश हुआ और सीढ़ियों से होता हुआ पानी की ओर जाने लगा। उसका पैर फिसल गया और वह पानी में जा गिरा। उस समय एक भिखारी अपने कपड़ों को किनारे पर सुखा रहा था। बालक को पानी में डूबता देख वह तालाब में कूद पड़ा और उसे बचा लिया।

यह जानते ही भानुमती और भूपति दौड़े-दौड़े आये। भानुमती ने अपने बेटे को गले लगा लिया और रोने लगी। फिर किनारे पर खड़े भिखारी के पास गयी और बोली, ''तुमने मेरे पुत्र को

- कपिल -

पुनर्जन्म दिया। तुम्हारा यह उपकार कभी नहीं भूलूँगी। तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हें जो भी चाहिए, माँगो।'' भूपति ने भी भिखारी से कहा, ''मेरी पत्नी ने ठीक ही कहा। माँगो, तुम्हें क्या चाहिए?''

भिखारी ने बड़े ही दबे स्वर में कहा, ''महाशय, मेरा नाम सत्यवान है। मैंने ऐसा कोई बड़ा काम नहीं किया। जिस बरतन में मैं भीख माँगता हूँ, वह भी जब पानी में गिरता है तो निकाल लेता हूँ।''

''फिर भी मेरी तृप्ति के लिए ही सही, कुछ न कुछ अवश्य माँगो,'' भूपति ने ज़ोर दिया।

सत्यवान कुछ क्षणों तक सोच में पड़ गया। फिर कहा, ''दीर्घकाल से मेरी एक इच्छा है। मैं चाहता हूँ कि एक दिन के लिए ही सही, ऐसी ज़िन्दगी गुजारूँ, जिस दिन सब लोग मेरी इज़्ज़त करें। बस, आप इसका प्रबंध कीजिए। इससे बढ़कर मुझे कुछ और नहीं चाहिए।''

''तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी होगी। हमारे साथ तुम भी हमारे गाँव चलो,'' भूपति ने कहा।

उस दिन भूपति के बेटे का जन्म-दिनोत्सव था, इसलिए कितने ही व्यापारी- मित्र बधाई और भेंट देने उसके घर आने लगे। तब तक भूपति ने सत्यवान को मूल्यवान कपड़ों से सज-धज दिया था। जो भी आते थे, वह उनसे सत्यवान का परिचय कराते हुए कहते थे, ''ये सत्यवान हैं। मेरे बचपन के दोस्त। बहुत बड़े व्यापारी हैं। शहर में इनका बड़ा नाम है।''

सत्यवान आदरणीय व संपन्न लोगों के बीच में बैठा हुआ था। आगन्तुक झुक-झुककर उसे

प्रणाम कर रहे थे। उसे लगा, मानों यह एक सपना है।

उन सबने सत्यवान का उतना ही आदर-सम्मान किया, जितना उन्होंने भूपति के प्रति दिखाया। उनमें से कुछ लोगों ने कहा, ''सत्यवान जी, आप अवश्य एक बार हमारे घर पधारें। हम अपने को धन्य समझेंगे। भूलियेगा मत।''

यह उत्सव आधी रात तक चलता रहा। सत्यवान ने भूपति के दिये कपड़े उतार दिये और अपने कपड़े पहन लिये। फिर भूपति को सविनय-प्रणाम करते हुए कहा, ''महाशय, मेरे जीवन की इच्छा पूरी हो गयी। और यह आप ही की दया से पूरी हुई। हर कोई मुझे अरे कहकर संबोधित करता था। उनकी वाणी में दुत्कार भरा हुआ होता था। मेरी बेइज़्ज़ती होती थी। जीवन में एक बार ही सही, मैं चाहता था कि लोग मेरा आदर करें, मुझे

मेरे नाम से पुकारें। मेरा सपना आज पूरा हुआ। आज मैं बहुत खुश हूँ।''

भूपति ने हँसते हुए कहा, ''जानते हो, सब लोग तुमसे क्यों घृणा करते हैं? और आदर नहीं करते?''

''आख़िर मैं एक भिखारी हूँ। इसीलिए वे मुझे आदर के योग्य नहीं समझते।'' भिखारी ने कहा।

''ऐसा समझना तुम्हारी ग़लती है। मेरी बातें ध्यान से सुनोगे तो तुम्हें सचाई मालूम हो जायेगी। तुम किसी बीमारी से पीड़ित नहीं हो। तुम्हारे शरीर के सब अंग ठीक-ठाक हैं। तुम मेहनत करके कमा सकते हो। ऐसी हालत में तुम्हें क्यों भीख माँगनी चाहिए? तुम जैसे हट्टे-कट्टे को भीख माँगते हुए देखकर तुमसे कोई घृणा करे तो इसमें उसकी क्या ग़लती है?''

सत्यवान ने उन बातों में छिपी वास्तविकता को महसूस किया। सत्य को पहचाना। उसने कहा, ''मुझे काम कहाँ और कैसे मिलेगा? मुझे तो कोई काम आता ही नहीं।''

''बहाने मत बनाओ। तुम काम करने को तैयार हो तो मैं तुम्हें काम दूँगा। कल से ही कपड़ों की मेरी दुकान में काम शुरू कर सकते हो।'' भूपति ने कहा।

''हाँ साहब, कल ही से काम पर लग जाऊँगा,'' भिखारी ने कहा और चल पड़ा। बग़ल के कमरे में बैठी भानुमती ने उनका यह वार्तालाप सुना। उसने भूपति से कहा, ''उसने तो हमारे एकमात्र बेटे को बचाया। इसके लिए हम उसके चिर ऋणी हैं। ऐसे प्राण-दाता को दुकान में नौकरी देकर हाथ धो लेना चाहते हैं? उसे दस लाख रुपये भी दो, तो कम हैं,'' उसके स्वर में आवेश था।

भूपति ने हँसते हुए कहा, ''शांति से मेरी बात सुनो। वह सालों से सुस्त है। पहले उसकी सुस्ती को दूर भगाना है। जब वह मेहनत करने लगेगा, कपड़ों की दुकान उसी के सुपुर्द कर देंगे। जो खुद मेहनत नहीं करता, वह अच्छा व्यापारी नहीं बन सकता। अपनी संपत्ति की सुरक्षा नहीं कर सकता।''

पति की दूरदर्शिता पर भानुमती बहुत ही प्रसन्न हुई।

समाचार झलक

प्राण-रक्षा चार महीने बाद

अमेरिका में आप्रवासी ६२ वर्षीय वियतनामी रिचर्ड वान फाम ने कैलिफोर्निया के लौंग बीच से केवल एक दिन के लिए एक पाल नाव से यात्रा शुरू की। वह अक्षरशः और आलंकारिक अर्थ में चार महीनों तक समुद्र की लहरों पर (संकट में) था, तभी एक अमरीकी नौसेना युद्ध पोत ने कोस्टा रिका तट से चार हजार कि.मी. दूरी पर से उसे उठाया। क्या तुम जानना नहीं चाहोगे कि वह कैसे जीवित रहा? कछुए, मछली और चिड़िया को खाकर जो वह बहती हुई नाव के मस्तूल पर चारा बाँध कर फँसा लेता था।
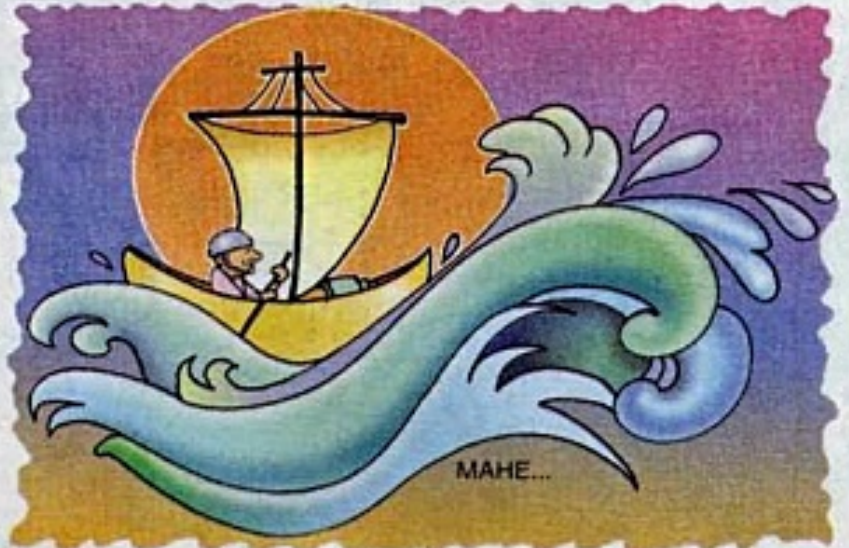
मंगल के लिए मूषक

धरती और आकाश दोनों में अनेक प्रयोगों के बावजूद अभी तक यह निश्चित नहीं है कि कब मानव के चरण मंगल पर पड़ेंगे। बर्तमान गणन के अनुसार यह छः महीने की अविराम यात्रा होगी। जो भी हो, वैज्ञानिक अभी यह पता लगाने में लगे हैं कि क्या मनुष्य, जब वह मंगल पर उतरेगा, तो उस ग्रह पर जीवित रह पायेगा, जहाँ पृथ्वी से ३८ प्रतिशत कम गुरुत्वाकर्षण है। आस्ट्रेलिया तथा अमेरिका के वैज्ञानिक मैसाशूसेट्स शिल्प-विज्ञान संस्थान के सहयोग से लगभग २००३ में मंगल पर मूषक भेजने पर विचार कर रहे हैं। उनका समझना है कि यदि मंगल के वातावरण में मूषक जीवित रह सकता है तो मनुष्य भी रह लेगा।

दोनों के दोनों

भूषण गोधूलि का निवासी है। हाल ही में वह बहुत बीमार पड़ा और आवश्यक चिकित्सा कराने के बाद ठीक हो गया। वैद्य ने उसे सलाह दी कि तबीयत में और सुधार हो, इसके लिए थोड़े दिनों के लिए वह सीतापुर में रहे तो अच्छा होगा। वैद्य के कथनानुसार भूषण सीतापुर गया और अपने रिश्तेदार के घर में रहा। वहाँ उसका अच्छा आदर-सत्कार हुआ।

हर रोज़ शाम को पैदल चलकर वह हाट जाता था। उस समय ठंढी हवा चलती थी और वातावरण भी बड़ा ही सुखद होता था। हाट में वह अनार के फल खरीदता था। वैद्य ने उससे कहा था कि पैदल जाने से और अनार खाने से तबीयत सुधरेगी और ये ज़रूरी भी हैं।

किसी भी दिन भूषण को अच्छे अनार मिलते नहीं थे। भूषण खरीदते समय अच्छे फलों को छांटकर ही लेता था, फिर भी ख़राब अनार उसे मिलते थे। इसलिए एक दिन जिससे वह खरीदता था, दूसरे दिन उसके यहाँ जाता ही नहीं था।

यों एक हफ़्ता बीत गया। एक दिन शाम को जब वह हाट में घूम रहा था तब उसने एक युवक की ऊँची आवाज़ सुनी, जो चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था, ''इस हाट में नया हूँ, पर फलों को पहचानने में अव्वल हूँ, पारखी हूँ। एक बार मेरे यहाँ खरीद लो तो दूसरी बार किसी दूसरे के यहाँ खरीदने का सवाल ही नहीं उठता।'' भूषण उस युवक के पास गया। उसने उससे कहा, ''हर कोई यही दावा करता है, पर सब व्यापारी धोखेबाज हैं।'' फिर उसने अपना अनुभव सुनाया।

- निर्मल पांडे -

''मैं तो यह सब कुछ नहीं जानता साहब। मैं तो समझता हूँ कि व्यापार ईमानदारी का, विश्वास का दूसरा नाम है। मैं अच्छा माल ले आता हूँ और अच्छा माल ही बेचता हूँ। एक बार उसकी क़ीमत बता दी तो बता दी। कोई फ़रक नहीं होता। एक बार मेरे पास खरीदकर तो देखिए।'' युवक व्यापारी ने विश्वास-भरे स्वर में कहा।

भूषण ने उसका नाम पूछा तो पता चला कि उसका नाम ईश्वर है। देखने में अनार अच्छे लग रहे थे, पर सौदे के लिए ईश्वर तैयार नहीं था। उसे छांटने भी नहीं दिया।

''माल बढ़िया है साहब। आज के लिए बस, आज के लिए मेरा एतबार कीजिए। कल से तो मेरा ही एतबार करेंगे। कहीं और जाने का सवाल ही नहीं उठता।'' ईश्वर ने कहा।

भूषण उसकी बातों से आकर्षित हुआ। अलावा इसके, फलों का इतना विश्वासपात्र दुकानदार उसे आज तक मिला भी नहीं।

सचमुच ही ईश्वर के दिये अनार अच्छे थे। मेजबानों ने उन फलों को खाकर कहा भी कि इतने मीठे व स्वादिष्ट फल उस शहर की दुकानों में कभी नहीं पाया। तब से लेकर भूषण ईश्वर की ही दुकान में जाने लगा और अनार खरीदने लगा।

यों एक महीना गुज़र गया। तब तक भूषण की तबीयत भी बहुत हद तक सुधर चुकी थी। सीतापुर में भूषण का वह आखिरी दिन था। इतने अच्छे फल देनेवाले ईश्वर का शुक्रिया अदा करने, जाते-जाते अनार फल खरीदने और उससे बिदा लेने वह उसकी दुकान पर गया। देखा कि

जो फल वहाँ रखे हुए हैं, अच्छे नहीं हैं। उसे वे अनार ख़राब लगे।

''देखने में आपको ऐसा लगता होगा साहब, पर सोना है, सोना। आप इन्हें खरीदने में आनाकानी मत कीजिए। अगर आपको धोखा दूँ तो कल आप थोड़े ही मेरे यहाँ आयेंगे,'' कहते हुए वह अनारों को तोलने लगा। भूषण नहीं चाहता था कि इनके लिए भी वही दाम दूँ, जैसे कि हर रोज़ दिया करता था। उसने ईश्वर से कहा, ''जाने-पहचाने एक दोस्त ने रास्ते में मुझसे कर्ज़ माँगा तो रक़म दे दी। जेब में पैसे भी बहुत कम हैं। इतने फल मत तोलो।''

''आपसे पैसे थोड़े ही नहीं मिलेंगे। आज नहीं तो कल मिल जायेंगे। जितने हैं, उतने ही दीजिए बाक़ी कल देख लेंगे,'' ईश्वर ने कहा।

''पर देखो, माल अच्छा हो, तभी रक़म

चुकाऊँगा।'' भूषण ने स्पष्ट कह दिया। ईश्वर इस पर हँस पड़ा, मानों उसे पूरा-पूरा विश्वास हो कि माल अच्छा ही होगा।

भूषण तो बता देना चाहता था कि शहर छोड़कर जानेवाला हूँ। पर बताते-बताते वह रुक गया। उस दिन उसने जो फल दिये, उनपर उसे संदेह था। माल अच्छा होने पर ही रिश्तेदारों को रक़म देकर उसे ईश्वर के सुपुर्द करने के लिए वह बताना चाहता था। अच्छा न होने पर भूषण वह रक़म हड़प जाना चाहता था। इसी उद्देश्य से ईश्वर ने जो रक़म तय की, उसमें से आधी रक़म मात्र देकर वह घर लौटा। भूषण ने रात को छिलका निकालकर देखा तो पाया कि उनमें से एक भी फल अच्छा नहीं है।

''इन फलों के लिए जो रक़म मैंने ईश्वर को चुकायी, वह काफी है। उसे और रक़म चुकाने की कोई ज़रूरत नहीं,'' भूषण ने सोच लिया।

दूसरे ही दिन सबेरे वह गोधूलि जाने के लिए घोड़ागाड़ी में निकल पड़ा। भूषण के साथ उस गाड़ी में और तीन लोग थे। पीठ पीछे किये वह बैठा हुआ था। किसी ने गाड़ी रोक दी।

''पैदल जाना चाहता था पर पैर में मोच आ गयी। गोधूलि के इधर ही गौरीपुर में उतर जाऊँगा। उतना किराया देने की शक्ति नहीं रखता। अपने बग़ल में बिठा लेना।'' कोई गाड़ीवाले से गिड़गिड़ा रहा था।

भूषण को लगा कि यह किसी परिचित व्यक्ति की आवाज है। गाड़ीवाला चिढ़ता हुआ बोला, ''इतना सबकुछ बोल चुके, पर तुमने बताया तक नहीं कि तुम कौन हो?''

''मेरा नाम ईश्वर है। सीतापुर में फलों का व्यापार करता हूँ। हमारे गाँव के एक भूस्वामी ने फलों की देखभाल की जिम्मेदारी मुझे सौंपी, इसलिए सीतापुर छोड़कर अपने गाँव में बस जाने के लिए जा रहा हूँ,'' ईश्वर ने कहा।

भूषण ने सर पलटकर उसकी ओर देखा। ईश्वर ने भी गाड़ी में चढ़ते हुए पलटकर भूषण को देखा। दोनों एक-दूसरे को क्षण भर मात्र के लिए देखते रहे। भूषण ने भी यह नहीं कहा कि अनार अच्छे नहीं है। बाक़ी रक़म देने की बात ईश्वर ने भी नहीं की। दोनों के दोनों क्या निकले, आप ही बताइये।
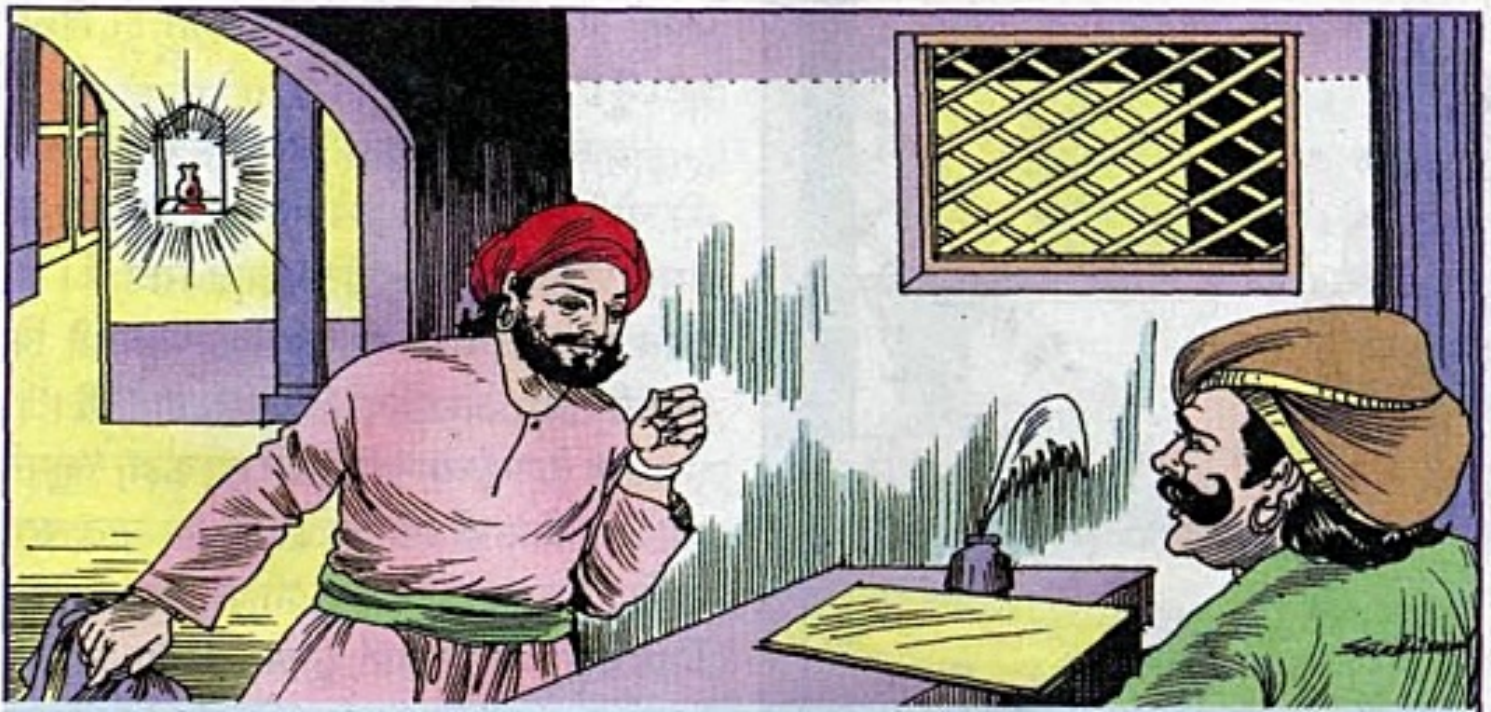
हज़ार अशर्फ़ियों की गठरी

चंपा नगर में चोरियाँ दिन व दिन बढ़ने लगीं। अफ़वाहें फैलती गयीं कि कोतवाल धनसेन चोरों से मिल गया है और इसी कारण से राजा को फरियादें मिल नहीं रही हैं। उस अफ़वाह की सच्चाई जानने के उद्देश्य से राजा बहुरूपिया बनकर रात में नगर में घूमने लगा। एक दिन वह एक सराय में ठहर गया।

''तुम्हारे पास धन हो तो मुझे सौंप दो। मैं उसे अपने यहाँ सुरक्षित रख दूँगा। नगर में चोरियाँ ज़्यादा हो रही हैं। लोग काफ़ी डरे हुए हैं। इसीलिए मैं तुम्हें सतर्क कर रहा हूँ।'' सराय के मालिक ने राजा को सावधान करते हुए कहा।

''मेरे पास अशर्फ़ियों की गठरी है। उसमें हज़ार अशर्फ़ियाँ हैं। पर मैं उस गठरी को अपने ही पास रखूँगा। कोई भी चोर मुझसे लूट नहीं सकता।'' निर्भय होकर राजा ने कहा और अपने कमरे में चला गया।

मुसाफ़िर बने एक चोर ने यह बात सुन ली। उसी रात को उसने राजा के कमरे में प्रवेश किया और हज़ार अशर्फ़ियों की वह गठरी चुराकर रफूचक्कर हो गया। सबेरे उठने के बाद राजा को इस बात का पता चला। वह सराय के मालिक से बोला, ''मेरी गठरी की चोरी हो गयी। अब मैं एक ज़रूरी काम पर बाहर जा रहा हूँ। रात को लौटूँगा। इस बीच तुम कोतवाल को शिकायत करो और उससे कहो कि मेरी गठरी मिल जायेगी तो उसे यथायोग्य पुरस्कार दूँगा।''

इसपर सराय के मालिक ने कहा, ''महाशय,

- श्रीरामकमल -
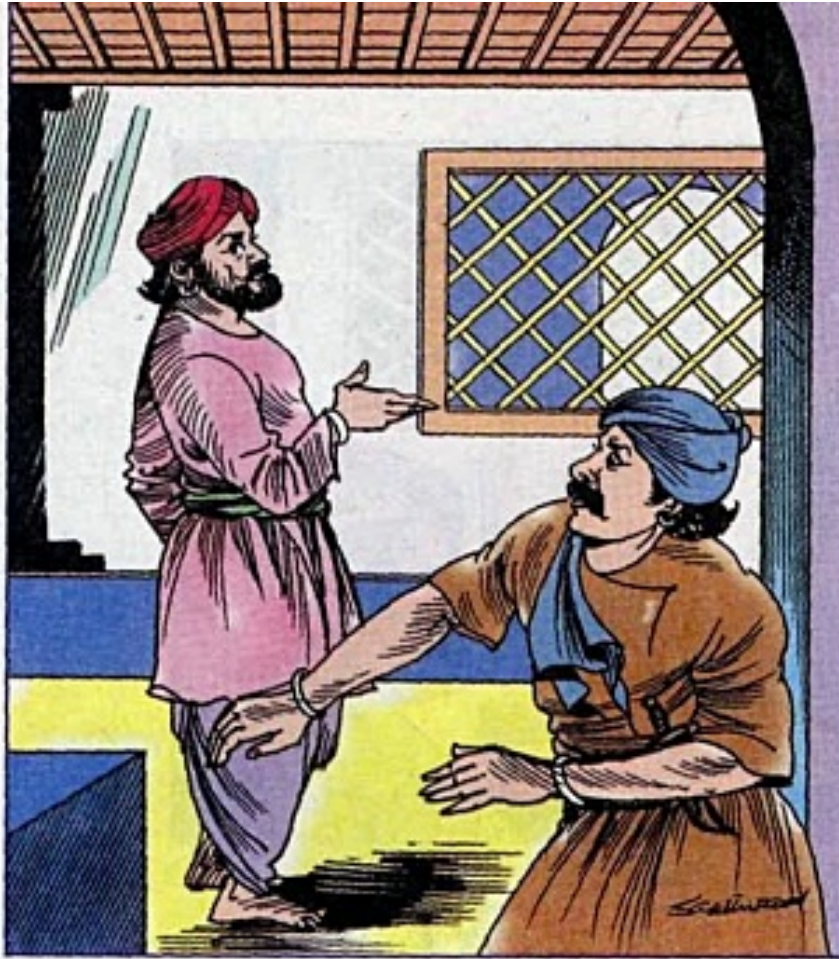
इस देश का राजा अच्छा आदमी है, समर्थ है, पर कोतवाल दुष्ट है, अव्वल दर्जे का बदमाश है। इसलिए कोतवाल से फरियाद करना बेकार है। उससे कोई फ़ायदा नहीं होगा।''

''यह सिर्फ़ अफ़वाह है। मुझे कोतवाल पर पूरा विश्वास है। मैंने जैसा कहा, वैसा करो।'' राजा ने गंभीर स्वर में कहा और वहाँ से चला गया।

रात को बहुरूपिया राजा सराय पहुँचा तो उसे देखकर सराय के मालिक ने व्यंग्य भरी हँसी हँसते हुए कहा, ''मैंने कोतवाल से शिकायत की पर कोई नतीजा नहीं निकला।''

राजा अपने कमरे में चुपचाप चला गया। थोड़े समय के बाद एक अपरिचित व्यक्ति राजा के कमरे में आया और कहने लगा, ''तुम झूठे हो।''

राजा ने आश्चर्य-भरे स्वर में कहा, ''मैं तुम्हें पहली बार देख रहा हूँ। कैसे जानते हो कि मैं झूठा हूँ।''

''कल रात को तुम्हारी अशर्फ़ियों की गठरी की चोरी मैंने ही की। ऐसे तो गठरी बड़ी है। पर उसमें चिथड़े, छोटे-छोटे कंकड़ मात्र हैं। पर तुमने तो कोतवाल को फरियाद करवायी कि तुम्हारी हज़ार अशर्फ़ियों की चोरी हो गयी।''

राजा ने उसे ध्यान से देखते हुए कहा, ''तुमने चोरी की फिर भी निर्भीक होकर यह बात बता रहे हो? लगता है, तुम कुछ भी कर सकते हो।''

''देखो, बेकार बातें सुनने के लिए अब मेरे पास समय नहीं है। अभी तुम्हें कोतवाल के घर मेरे साथ आना होगा और तुम्हें बताना होगा कि उस गठरी में केवल सौ अशर्फ़ियाँ ही थीं।''

''अगर नहीं बताऊँगा तो?'' राजा ने कहा।

चोर ने अपने कपड़ों में से एक छोटा चाकू निकाला और धमकाते हुए कहा, ''नहीं बताओगे तो तुम्हारे बदन भर में जख्म ही जख्म होंगे।''

राजा ने बड़ी चालाकी से उसके हाथ को कसकर पकड़ लिया और उसके हाथ से चाकू को गिरा दिया। फिर उसके दोनों हाथों को पीछे मोड़कर बाँध दिया और कहा, ''मैं अभी तुम्हें कोतवाल को सौंपता हूँ।''

''ठीक है, मुझे कोतवाल के सुपुर्द कर देना, पर तुम्हें उसे बताना होगा कि तुम्हारी गठरी में हज़ार अशर्फ़ियाँ नहीं, सौ अशर्फ़ियाँ ही हैं। नहीं तो कोतवाल मुझे ज़िन्दा नहीं छोड़ेगा।'' चोर रोता हुआ बोल रहा था।

''तुम चोरी के अपराध में पकड़े गये चोर

हो। पर, तुम्हें तो इसका कोई डर नहीं। तुम तो इसी बात पर ज़ोर दे रहे हो कि गठरी में कितना धन है, वह मैं बताऊँ। तुम्हारा व्यवहार बड़ा ही विचित्र लग रहा है।'' राजा ने कहा।

चोर ने लंबी साँस खींचते हुए कहा, ''मैं चोर हूँ, फिर भी कोतवाल को विश्वास करना चाहिए कि मैं ईमानदार हूँ। मैंने जिस गठरी की चोरी की, उसमें सिर्फ़ सौ अशर्फ़ियाँ ही हैं, यह कहते हुए उसने मुझे कोड़े से पिटवाया। अगर मेरी बातों पर विश्वास न हो तो मेरी पीठ देख लो।''

राजा ने पीछे जाकर देखा तो सचमुच उसकी पीठ पर कोड़े के निशान थे।

''कोतवाल अच्छी तरह से अपनी जिम्मेदारियाँ निभा रहा है। चोरी के अपराध में तुम्हें यह सज़ा मिलनी ही चाहिए।'' राजा ने कहा।

''साहब, तुमने तो सौ अशर्फ़ियाँ ही खोयीं। मैं तुम्हें दो सौ अशर्फ़ियाँ दूँगा। तुम कोतवाल से सच बता देना। मेरी ईमानदारी पर उसे शक हो जाए तो मेरा जीना ही दूभर हो जायेगा।''

राजा को उसकी बातों पर और आश्चर्य हुआ। उसने विषय के स्पष्टीकरण के लिए उसपर दबाव डाला तो सच बताते हुए उसने कहा, ''चोरी करते ही मैं कोतवाल के पास गया और उसे बताया कि गठरी में सौ अशर्फ़ियाँ हैं। फिर उसने उसमें से आधी अशर्फ़ियाँ मुझे दीं। जब सराय के मालिक ने फरियाद की कि हज़ार अशर्फ़ियों की चोरी हुई है तो उसने मुझे बुलवाया और बाक़ी चार सौ पचास अशर्फ़ियाँ देने के लिए मुझे कोड़े से पिटवाया। मैं अपनी ईमानदारी साबित करने के लिए तुम्हारे पास आया हूँ।''

अब राजा सब कुछ समझ गया। उसने अपने राजा होने का रहस्य खोल दिया और उसे सावधान किया कि आगे वह ऐसे काम न करे। फिर सैनिकों को भेजकर कोतवाल को क़ैद करवाया। कोतवाल रोता-बिलखता अपने निर्दोष होने पर बल दे रहा था तो राजा ने उससे कहा, ''तुम चोरों से ईमानदारी की आशा करते हो। पर, तुममें ईमानदारी रत्ती भर भी नहीं है। थोड़े समय तक जेल में चोरों के बीच रहो और उनसे ईमानदारी सीखो।''

तब से चंपा नगर में चोरियाँ बंद हो गयीं।

हिमाचल प्रदेश की एक लोक कथा

पर्वतीय राज्य हिमाचल प्रदेश पश्चिमी हिमालय के हृदय-स्थल में बसा हुआ है। इसकी ऊँचाई ३५० मी. से लेकर ६९७५ मी. तक है।

स्वतंत्रता के पश्चात पहाड़ी राज्यों का एक केंद्रशासित क्षेत्र बनाया गया। यह मुख्यतः शिमला के इर्द-गिर्द के पहाड़ी राज्यों से बना था। पंजाब क्षेत्र के पहाड़ी राज्य इन पहाड़ी राज्यों के साथ १ नवम्बर १९६६ को मिला दिये गये। दिनांक २५ जनवरी १९७१ को हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य घोषित कर दिया गया।

सतलज, रावी, व्यास तथा पार्वती राज्य की मुख्य नदियाँ हैं। राज्य में अनेक झीलें भी हैं।

राज्य का क्षेत्रफल ५५,६७३ वर्ग कि.मी. तथा जनसंख्या ६,०७७,२४८ है। इसके उत्तर में जम्मू-कश्मीर, दक्षिण-पूर्व में उत्तर प्रदेश, दक्षिण में हरयाणा, पश्चिम तथा दक्षिण-पश्चिम में पंजाब तथा पूरब में चीन है।

यहाँ की राजधानी शिमला है। हिंदी यहाँ की राजभाषा है। अलग-अलग क्षेत्रों में अनेक बोलियाँ बोली जाती हैं।

भूत का चोगा

लाहौल के पुइकर गाँव को अपने विख्यात ज्योतिषी, फुनचोक पर बड़ा गर्व था। दूर-दूर से लोग उसके पास परामर्श लेने आते थे। उसे जन्म कुंडली पढ़ने का तथा ग्रहों के मानव जीवन पर पड़नेवाले प्रभाव का अच्छा ज्ञान था।

वह स्थानीय देवता का गूर (देवता का माध्यम) भी था। प्रायः देवता उसकी वाणी से बोलता था और ग्रामीणों का मार्गदर्शन करता था। वह लोगों की, उनके पूर्वजों तथा मृत प्रिय जनों के साथ सलाह के लिए संपर्क स्थापित करने में, सहायता किया करता था।

एक दिन पड़ोसी गाँव सतींग्री के मुखिया ने

फुनचोक के पास एक संदेशवाहक भेजा। उसने उसे एक विचित्र कहानी सुनाई : ''हमारे गाँव को एक शैतान भूत परेशान कर रहा है।'' उसने फुनचोक की पत्नी द्वारा दिये गये चांग (जौ का घर में बनाया गया बियर) की एक लंबी घूँट लेकर बताना शुरू किया। ''वह हम लोगों की चीजें चुरा लेता है, गोशाला से पशुओं को बाहर निकाल देता है, हमारे खेतों को अस्तव्यस्त कर देता है, हमारे बर्तनों और बाल्टियों को तोड़फोड़ देता है, हमारे जलावनों को जला देता है और बच्चों को डराता है। लेकिन हम लोगों ने उसकी इन शैतानियों की परवाह नहीं की और धैर्य के साथ सहते रहे, क्योंकि उसने वास्तव में किसी का नुकसान नहीं किया। वह केवल नटखट लगता था। लेकिन अब उसने हद कर दी। अब हमसे बर्दाश्त नहीं होता।''

''क्यों? अब क्या हो गया?'' फुनचोक ने पूछा।

''भूत ने कल एक घृणित और अक्षम्य कार्य कर दिया।'' संदेश वाहक ने उग्र होते हुए कहा।

विस्तार से कहने के लिए फुनचोक द्वारा प्रेरित

किये जाने पर संदेशवाहक ने धीमे स्वर में कहा, ''कल मुखिया पंचायत में बैठे थे। वे और दूसरे बयोवृद्ध किसी विवाद का निर्णय कर रहे थे और बहुत से ग्रामीण वहाँ उपस्थित थे। अचानक मुखिया की लंबी दाढ़ी गायब होने लगी।''

चम्बा रूमाल

चम्बा रूमाल हिमाचल प्रदेश का पर्यायवाची है। यह कपड़े का एक टुकड़ा होता है जिसपर चम्बा चित्रकारी शैली पर आधारित जटिल कसीदाकारी की जाती है। यद्यपि इसे रूमाल कहा जाता है, फिर भी चम्बा रूमाल सामान्य रूमाल से कहीं अधिक कुछ और है। यह एक सज्जा है जिसे पुरुष अपने कन्धों पर रखते हैं और स्त्रियाँ घूंघट की तरह इस्तेमाल करती हैं। चम्बा रूमाल एक बहुमूल्य निधि है और इसके बिना दुल्हिन का साज-सामान अधूरा रहता है।

इस कसीदाकारी के अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश अपने शॉल, कम्बल और कालीन के लिए भी प्रसिद्ध है। चम्बा, कांगड़ा तथा गोम्पा चित्रकारी शैली के लघु चित्र बहुत लोकप्रिय हैं।

"हे राम ! वह कैसे?" फुनचोक ने पूछा।

"यह भूत था !" संदेशवाहक ने कहा। "भूत दाढ़ी को खा रहा था। हम सब लोगों ने देखा कि भूत मुखिया की दाढ़ी खा रहा है। लेकिन हम कुछ नहीं कर सके। कुछ लोगों ने दौड़कर पकड़ने की कोशिश की, पर व्यर्थ ! हमारे मुखिया की खूबसूरत दाढ़ी अब नहीं रही।" संदेशवाहक कहते-कहते रो पड़ा। फिर अपने को संभालते हुए उसने कहा, "अब हम लोग चाहते हैं कि आप इस भूत को हमारे गाँव से भगा दें।"

फुनचोक ने, इसलिए, अपने धंधे का सामान एकत्र किया, जिसमें कुछ जड़ी-बूटियों का एक गट्ठर, एक मजबूत छड़ी, तथा अन्य छोटी-छोटी नुमाइशी चीजें थीं। संदेशवाहक के साथ वह चल पड़ा। वह जौट (पहाड़ी घाटी) को पारकर शीघ्र ही सतींग्री पहुँच गया।

मुखिया के घर में अंधेरा और उदासी छायी थी। परिवार के सदस्य अलग-अलग बैठे हुए सूँ-सूँ करके सुबक रहे थे और अपनी आँखें मल रहे थे। तभी दोनों व्यक्ति मुखिया के पास आये। वह अभी घटना के आघात और गम से उबरा नहीं था। जब वह ज्योतिषी को अपने पास बिठाने के लिए लाने गया, तो उसके होंठ काँप रहे थे। उसने अतिथि के लिए मक्खन-चाय लाने का आदेश दिया।

"मेरे आदमी ने सब कुछ बता दिया होगा।" मुखिया ने कहा। "इस भूत के लिए कुछ करना होगा। कल वह मेरी दाढ़ी खा गया। कल वह किसी के बाल और परसों किसी की नाक खा जायेगा। ऐसा कब तक होता रहेगा?"

"मैं उसे भगा दूँगा।" फुनचोक ने कहा। उसने अपना गट्ठर खोला, अपने सिर के चारों ओर पट्टी बाँधी, अपनी छड़ी घुमाई और अपने काम में लग गया। उसने एक हवन कुण्ड बनाया, उसमें अग्नि प्रज्वलित की और उसमें कुछ चूर्ण डाला, जिससे धूल के बादल बन गये और हरेक को छींक आने लगी। तब उसने अपने गालों में कुछ सूइयाँ चुभो दीं और अपनी आँखों को ऊपर घुमाते हुए कुछ मंत्र बुदबुदाया।

सतींग्री का भूत प्रकट हुआ। उसे लगा जैसे अग्नि उसे निगलने जा रही है। उसने अपना चोगा चीर डाला और उसे अग्नि में फेंककर वह क्षितिज की ओर भाग गया।

सबने संतोष की साँस ली। भूत आखिर में भाग गया।

चोगा अग्नि में नहीं गिरा क्योंकि फुनचोक ने

सेब

हिमाचल प्रदेश गोल्डेन सेब की विशिष्ट किस्म के लिए प्रसिद्ध है। एक अमरीकी मिशनरी सत्यानन्द (सैमूएल इवान्स) स्टोक्स ने हिमाचल प्रदेश में सेब की खेती की शुरुआत की। उसने सन् १९०४ में अपने देश से लाये सेब का बीज यहाँ बोया। आज कोटगढ़ सेब की सघन खेती के क्षेत्रों में से एक है और यह राज्य का सेब-हृदय-स्थल है।

सेब के उद्यान कांगड़ा और थानेदार की घाटियों में भी पाये जाते हैं। सेब उद्यानों के अतिरिक्त पर्वतीय ढलानों पर चाय बगान भी प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं।

इसे पकड़ लिया था। उसने आग बुझा दी और जाने की तैयारी की। मुखिया ने कृतज्ञता प्रकट की और उसे अनेक उपहारों के साथ-साथ। उसका भारी शुल्क भी दिया। फुनचोक ने भूत के चोगे तथा अन्य सभी सामानों का एक गट्ठर बनाया और घर की ओर चल पड़ा।

जब वह पहाड़ी ढलान पर उतर रहा था, अचानक उसके सामने कुछ आ गया। यह सतींग्री का भूत था। "मेरा चोगा वापस कर दो!" भूत ने अनुरोध किया। "और इसके बदले मैं तुम्हारा बड़ा उपकार कर दूँगा।"

"नहीं," अपने गट्ठर को कसकर पकड़ते हुए फुनचोक ने कहा। उसने सोचा कि भूत के लिए चोगा बहुत महत्व रखता है, अन्यथा वह उसके लिए इतना गिड़गिड़ाता नहीं।

"मैं इसके बिना जम जाऊँगा। यह मेरा एकमात्र चोगा है।" भूत ने कहा। लेकिन फुनचोक को विश्वास नहीं हुआ। निश्चय ही चोगा वापस माँगने के अधिक महत्वपूर्ण कारण होंगे। तभी सचाई सामने आ गई।

"मैं हमेशा के लिए तुम्हारा गुलाम बने रहना नहीं चाहता। मेरा चोगा कृपा करके लौटा दो।" बिलखता हुआ भूत बोला।

"अहा!" फुनचोक बहुत प्रसन्न हो गया। "तो तुम मेरा गुलाम बन जाओगे, यदि मैं तुम्हारा चोगा रख लूँ! वाह! तब तो मैं इसे अवश्य रखूँगा और तुम मेरे लिए काम करोगे।" भूत विलाप करता हुआ अदृश्य हो गया। और फुनचोक तेज कदम के साथ घर की ओर बढ़ता गया। घर पहुँचकर उसने सभी उपहार अपनी पत्नी को दे दिये लेकिन उसे बताये बिना चोगे को अपनी अटारी में छिपा कर रख लिया।

अब भूत उसके वश में था। जब भी उसे कुछ काम करना होता तो वह सतींग्री के भूत को बुला

करने के लिए अनुरोध करता, लेकिन फुनचोक केवल उस पर हँस देता।

एक दिन कुछ दूर एक गाँव में एक महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित मंदिर उत्सव में अनुष्ठान संपन्न कराने के लिए फुनचोक को आमंत्रित किया गया। वह ऐसे प्रतिष्ठित आमंत्रण को अस्वीकार न कर सका। भूत को एक मौका मिल गया। वह पुड़कर से चुपचाप भागकर बुद्धिमान पुराने गोम्पू भूत से मिलने चला गया। गोम्पू भूत भूतों में मंदरिन था। उसके पास दुनिया भर में भूतों की हर समस्या का समाधान था।

जब सतींग्री भूत ने अपना दुखड़ा सुनाया तो गोम्पू भूत ने कुटकुटाते हुए इसकी निन्दा की, ''जब कोई भूत अपनी सीमा लांघता है तो यही होता है। तुमने मुखिया की दाढ़ी सारे गाँव को दिखाकर क्यों खाई? भूत शैतानी तो कर सकते हैं, क्योंकि यह उनका अधिकार है, किंतु यदि हद से पार चले जाओ तो तुम्हें ढिठाई के लिए कीमत चुकानी पड़ेगी।''

सतींग्री का भूत फूट-फूटकर रोने लगा। उसने वादा किया कि अब वह अपनी सीमा नहीं लांघेगा। इसलिए गोम्पू भूत फुनचोक से उसका चोगा वापस लेने में उसकी मदद करने के लिए राजी हो गया।

गोम्पू भूत गड्डी (गड़ेरिये) का रूप बनाकर फुनचोक के घर गया। उसने फुनचोक की पत्नी से कहा, ''मैं फुनचोक का पुराना दोस्त हूँ, लेकिन बहुत दिनों से हमलोग मिल नहीं पाये। मैं इधर से गुजर रहा था, इसलिए सोचा कि इनसे मिलता चलूँ।''

''मेरे पति गाँव से बाहर गये हैं।'' फुनचोक

लेता। सर्दियों में भूत उसके आंगन में एकत्र बर्फ की सफाई करता और पहाड़ी के नीचे के झरनों से पानी ले आता।

वसन्त ऋतु में वह ज्योतिषी के खेतों की जुताई करता था और उनमें जौ के बीज बोता था। जब फसल तैयार हो जाती तो उसकी कटाई करता था। उसे सत्तू (भूने हुए जौ का आटा) भी तैयार करना पड़ता था। ग्रीष्म ऋतु में वह पहाड़ियों में दूर के देवदार जंगलों से जलावन लाता था।

फुनचोक अब बिलकुल काम नहीं करता था। वह बैठकर आराम करता रहता और भूत को दौड़ाता रहता था। वह मोटा और आलसी होता चला गया जबकि भूत पीला पड़ गया। फुनचोक ने ज्योतिष का कार्य भी छोड़ दिया, क्योंकि भूत के परिश्रम के कारण खेत और उद्यान से अच्छी उपज हो जाती थी।

प्रायः भूत उसके पास जाकर चोगा वापस

की पत्नी ने कहा। ''आप क्यों नहीं आज यहाँ ठहर जाते? कल वे लौट आयेंगे।''

''ओह नहीं !'' वह बोला। ''मुझे एक विवाहोत्सव में शामिल होना है। मैं नहीं ठहर सकता। मैं लौटते समय फिर देख लूँगा। लेकिन... मुझे संदेह कि आप मेरे पुराने चोगे को ढूँढ़कर, जो मैंने बहुत पहले इनके पास छोड़ दिया था, मेरी मदद करेंगी? मुझे अभी इसकी सख्त जरूरत है।'' फुनचोक की पत्नी ने उसे स्वादिष्ठ भोजन कराया और जब तक भूत ने आराम किया, उसने चोगे को चारों तरफ ढूँढ़ा।

अंत में अटारी में उसे चोगे के समान दीखनेवाला एक वस्त्र मिला। उसे मालूम था कि वह उसके पति का नहीं है, इसलिए वह उसे गोम्पू भूत के पास ले आई।

वह उसे देखकर फूला न समाया। वह वास्तव

पर्यटन स्थल

हिमाचल प्रदेश के सर्वाधिक सम्मोहक स्थलों में से एक है - कुलू की घाटी जिसे देवताओं की घाटी भी कहते हैं।

यहाँ की राजधानी शिमला एक दूसरा आकर्षण है। इस पहाड़ी पर्यटन स्थल के चतुर्दिक अनेक दर्शनीय स्थान हैं। डलहौजी एक अन्य पर्वतीय पर्यटन स्थल है जो पर्यटकों को आकृष्ट करता है।

में भूत का ही चोगा था। तुम जानते हो, सभी भूत एक ही प्रकार का चोगा धारण करते हैं। इसलिए वह जान गया कि यह भूत का ही चोगा है। ''हाँ, यही सचमुच। बहुत-बहुत शुक्रिया !'' उसने कहा और वह चोगा लेकर वहाँ से झटपट चल पड़ा।

उसने सतींग्री भूत को चोगा लौटा दिया जिसने इसे पाकर बहुत भारमुक्त और आराम अनुभव किया। ''मैं अब किसी मानुष को परेशान नहीं करूँगा।'' उसने कसम खाई और वहाँ से खिसक गया।

फुनचोक के वापस आने पर उसकी पत्नी ने उसके पुराने दोस्त के आगमन के बारे में बताया। जब उसकी पत्नी ने यह बताया कि उसने उसके दोस्त का चोगा वापस कर दिया है, तब उसने समझा कि उसे मूर्ख बनाया गया है। अब उसे एक बार पुनः खेतों पर खटना पड़ेगा, झरनों से पानी लाना पड़ेगा, बाड़े से बर्फ हटाना पड़ेगा, शैतान भूतों को भगाना पड़ेगा और जन्म-कुण्डली पढ़नी पड़ेगी।

- सुमी द्वारा पुनर्कथित

अपने भारत को जानो

भारत पिछले ५५ वर्षों से एक स्वतंत्र राष्ट्र है। यद्यपि हमारा लोकतंत्र जीवन्त रहा है, फिर भी पिछली अर्ध शताब्दी में हमारे देश में कितने ही उत्थान-पतन आये। इस महीने की प्रश्नोत्तरी में, आओ, उनमें से कुछेक का स्मरण करें।

१. सन् १९४८ में ३० जनवरी को राष्ट्र पिता की गोली मारकर हत्या कर दी गई। उसके दस दिन पूर्व उन्हें एक प्राणघातक खतरे का सामना करना पड़ा था। वह घटना क्या थी?

२. भारतीय सेना के लिए १५ जनवरी १९४९ का दिन बहुत महत्वपूर्ण था। उस दिन का क्या महत्व है?

३. प्रथम आम चुनाव अक्तूबर १९५१ और फरवरी १९५२ के मध्य किया गया था। कितने राजनीतिक दलों ने इसमें भाग लिया? इनमें कितने दल राष्ट्रीय स्तर के थे?

४. किस वित्त मंत्री को सबसे अधिक बार बजट पेश करने का श्रेय प्राप्त था? कितनी बार? और मंत्री कौन था?

५. भारत का एक प्रसिद्ध पर्व - कुंभ मेला - पहली बार, भगदड़ मच जाने के कारण, बंद कर दिया गया। यह कब हुआ? त्रासदी में जान-माल की कितनी हानि हुई?

६. देश का सर्वोच्च असैनिक सम्मान 'भारत रत्न' कब दिया गया? पहली बार इससे सम्मानित होनेवाले कौन थे?

७. प्रथम एशियाई खेल का आयोजन सन् १९५१ में दिल्ली में हुआ था। भारत के लिए पहला स्वर्ण पदक किसने जीता? और किस खेल में?

८. भारत का पहला प्रधान (कार्डिनल) कौन था? उसे कब प्रतिष्ठित किया गया?

९. भारत का विशालतम राज्य संघ मई १९४८ में संघटित किया गया। इसका नाम क्या था? इसकी राजधानी कहाँ थी?

१०. भारत की दो महान आध्यात्मिक हस्तियों ने १९५० में, अप्रैल और दिसम्बर में देह त्याग किया। वे कौन-कौन थे?

(उत्तर अगले महीने)

नवम्बर प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. एक पिता के पत्र-पुत्री के नाम

२. सन् १९४७ में १४ अगस्त की अर्ध रात्रि, संसद भवन का केंद्रीय कक्ष, एक स्वतंत्र राष्ट्र के उद्घाटन के लिए

३. विजय लक्ष्मी पंडित, संयुक्त प्रांत (संप्रति उत्तर प्रदेश)

४. गलत

५. वानर सेना। राष्ट्रीय नेताओं के संदेश राष्ट्रीय नेताओं तक पहुँचाना।

६. भारत-पाक युद्ध में विजय (३ दिसम्बर से १६ दिसम्बर तक)

विघ्नेश्वर

विनायक चौथ के दिन संध्या के समय विघ्नेश्वर अपने दांत जैसे सफ़ेद लगनेवाले चन्द्रमा को देखते धीरे-धीरे क़दम बढ़ा रहे थे। उस वक़्त वे भर पेट खा चुके थे। उनके साथ चूहा भी चल रहा था।

कहा जाता है कि दूज का चाँद विघ्नेश्वर का चिह्न है। विघ्नेश्वर के माथे पर सफ़ेद चन्दन की बालचन्द्र जैसी टीका, आसमान पर चौथ के चन्द्रमा के प्रतिबिंब जैसे शोभायमान थी। विघ्नेश्वर के अन्य नाम दुग्धचन्द्र और भालचन्द्र भी हैं।

चलते वक़्त विघ्नेश्वर के अंगूठे से एक पत्थर टकरा गया जिससे वे औंधे मुँह गिर गये। इसपर उनका पेट फट गया और पेट में स्थित सारे खाद्य पदार्थ छितर गये। इसे देख आसमान में चमकने वाले चन्द्रमा खिल-खिला कर हँस पड़े। देवताओं ने वहाँ पर आकर एक विशाल सर्प के चमड़े से विनायक के पेट को सी दिया।

पार्वतीजी को चन्द्रमा पर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने तुरंत चन्द्रमा को शाप दिया कि विनायक चौथ के दिन जो भी च न्द्रमा को देखेगा, वह निंदा का पात्र बनेगा।''

उस दिन से लोग विनायक चौथ के दिन बच्चों को भी चन्द्रमा को देखने से बचाते आने लगे।

द्वापर युग का प्रवेश हुआ। श्रीकृष्ण देवकी के गर्भ से पैदा होकर गोकुल में यशोदा के घर पलने लगे। बालकृष्ण ने पूतना, शकटासुर और तृणावर्त नामक राक्षसों का संहार किया।

वह विनायक चौथ का दिन था। यशोदा

दूध दुह रही थी। बालकृष्ण ने यशोदा की पीठ पर से झुककर बर्तन में भरे दूध में प्रतिबिंबित होनेवाले चन्द्रमा को देखा और तालियाँ बजाते हुए बोला, ''ओह चन्दामामा ! दूध के अंदर चन्दामामा है।'' यशोदा चौंककर बोली, ''मेरे कान्ह, तुमने कैसा काम कर डाला? तुम अनावश्यक निंदा के शिकार हो जाओगे।''

''निंदा के माने क्या है, माँ?'' कृष्ण ने पूछा। ''तुम्हें लोग यूँ ही चोर बतायेंगे।'' यशोदा ने जवाब दिया।

''माँ, तुम चिंता न करो। मैं दूध-मक्खन की चोरी किया करूँगा, तब वह निंदा का कारण बनेगा न, माँ?'' कृष्ण ने पूछा।

''अरे दुष्ट ! तुम्हारे मुँह में ब्रह्माण्ड टूट पड़े।'' यों कहते यशोदा ने अपने गालों में चुटकी ली।

''माँ, क्या तुमने ब्रह्माण्ड देखा है?'' कृष्ण ने पूछा।

''ब्रह्माण्डों की बात छोड़ दो, मगर तुम्हारे बड़े होने के बाद भी तुम पर नाहक़ दोषारोपण किया जाएगा !'' यों कहते यशोदा ने प्यार से कृष्ण के कोमल गाल पर चुटकी दी।

''तब तो उस वक़्त मुझे फिर से चन्दामामा को देखना है न, माँ?'' कृष्ण ने फिर पूछा।

''बड़े हो जाने के बाद चन्दामामा को देखना और भी बड़ा अपराध है।'' यशोदा बोली। फिर अपने मन में गुनगुनाने लगी, ''हे विघ्नेश्वर ! भोले बालक ने चन्दामामा की छाया देख ी है। बस, यही बात है। इसको क्षमा कर दो।''

दूसरे दिन बलराम दौड़ते हुए आ पहुँचा और बोला, ''माँ, छोटा भैया कृष्ण मिट्टी खा रहा है। मैं झूठ नहीं बोलता हूँ। जाकर उसका मुँह तो देखो।'' इस पर यशोदा दौड़ते हुए कृष्ण के पास पहुँची।

कृष्ण उस वक़्त मिट्टी के ढेलों को जमाकर रहा था। यशोदा ने कृष्ण के कान पकड़कर पूछा, ''कान्ह ! मुँह खोलो तो?''

''माँ, मुझे पिटवाने के लिए शायद किसी ने तुमसे चुगली खाई होगी। कल ही तो तुमने कहा था कि मुझ पर नाहक दोषारोपण होगा। मैं मिट्टी से मोदक और लड्डू बना रहा हूँ, माँ। मिट्टी से निर्मित विनायक मिट्टी से बनाई गई चीज़ें जरूर खायेंगे, माँ !'' कृष्ण ने समझाया।

यशोदा ने अपने गालों पर खुद चपत लगाकर कहा, ''बेटा, ऐसा मत बोलो ! यह तो बड़ी भारी भूल है। मिट्टी से बनाये, या पत्थर से, आख़िर देवता देवता ही तो होते हैं। भगवान, गलती हो गई ! विघ्नेश्वर ! इस बच्चे की बातों पर ध्यान

मत दो !'' यों कहते यशोदा ने विघ्नेश्वर का ध्यान किया।

''तब तो माँ, अगले विनायक चौथ के दिन तुम बहुत से घी के मोदक और लड्डू बनाओ। मैं देखूँगा कि आखिर वे कितने खाते हैं ! अगर नहीं खाये तो मैं खिलाऊँगा?'' कृष्ण ने कहा।

''तुम पहले अपना मुँह तो खोलो।'' यों कहते यशोदा झुककर कृष्ण के मुँह की ओर देखने लगी। तभी कृष्ण ने ''आँ...'' कहते अपना मुँह खोल दिया।

कृष्ण के मुँह के भीतर देखते ही यशोदा पसीना पसीना हो गई और वह लुढ़क पड़ी। क्योंकि उसे कृष्ण के मुँह में ब्रह्माण्ड, नक्षत्र-मण्डल, सूर्य, चन्द्र, समुद्र, पर्वत-समस्त दिखाई दिये। साथ ही दूध दुहनेवाली यशोदा की पीठ पर झुककर उसके कंठ में अपने नन्हें हाथ लपेटकर दूध में चन्दामामा को दिखानेवाला कृष्ण दिखाई दिया। यशोदा ने उसे सपना समझकर अपनी आँखें मल लीं। यह सोचकर उसने अपने चारों तरफ़ देखा कि किसी देवता या विनायक ने उसे माया में डाल दिया हो। यशोदा की चकित दृष्टि को देख उसके चारों तरफ़ कई बच्चे जमा हो गये। वे किलकारें मारने लगे, कोलाहल मचाते तालियाँ बजाने लगे।

खंभे की आड़ में खड़े होकर बलराम मुस्कुराता हुआ बोला, ''देखो माँ, तुम्हें मिट्टी दिखाई दी? ठीक से देखो, माँ।'' यशोदा को उसके मुँह में सारे देवता दिखाई दिये। कृष्ण मुरली बजा रहा था तो विनायक ताँडव नृत्य करते दीख पड़े। कृष्ण बड़े काल नाग पर लात

मार रहा था। नाग कृष्ण को अपनी लपेट में ले रहा था। उस दृश्य को देख यशोदा बेहोश हो गई। जब उसने अपनी आँखें खोलकर देखा, तब उसकी खाट के चारों ओर उसे गोपिकाएँ दिखाई दीं। तब उसने सबसे पूछा, ''मुझे क्या हो गया है?''

उसे किसी बात की याद न थी। वह सारी बातें इस तरह भूल गई, मानो कुछ हुआ ही न हो। इस पर गोपिकाओं ने कहा, ''हम नहीं जानतीं कि तुम्हें क्या हो गया है? हमारे घरों में चोरी हो गई है । वह चोर और कोई नहीं है, तुम्हारा लाड़ला बेटा है। मक्खन, मलाई, दूध, दही - ये सब तुम्हारे बेटे के द्वारा बंदरों के झुंड और ग्वाल-बालों को बाँटते हमने अपनी आँखों से देखा है।''

यशोदा खीझकर बोली, ''क्या बोली? क्या तुम लोग समझती हो कि ये सारी चीज़ें हमारे

घर में नहीं हैं? गोकुल के सारे घर मिलाकर हमारे आधे घर के बराबर नहीं हैं। तुम लोग यहाँ से चली जाओ !'' यों कहकर सारी गोपिकाओं को उसने वहाँ से भगा दिया।

उस वक़्त कृष्ण धीरे-धीरे अपने क़दम बढ़ाते वहाँ पर आया और पूछा, ''माँ, क्या हुआ है?''

''मैंने जो कहा था, वही हुआ। तुम पर ये सब दोषारोपण कर रहे है।'' यशोदा ने कहा।

''माँ, मैं दोषारोपण से बच गया ! उन लोगों ने जो कुछ कहा, सही है।'' कृष्ण ने जवाब दिया।

इस पर यशोदा को बहुत गुस्सा आया। उसने एक बड़ा रस्सा लेकर कृष्ण को एक बड़ी ओखली से बाँध दिया।

कृष्ण दो जुड़वें साल वृक्षों के बीच घुसकर ओखली को खींच ले गया। वे दोनों विशाल पेड़ जड़ सहित उखड़ गये। इस पर शाप से मुक्त हुए दो गंधर्व पेड़ों से निकले और कृष्ण की स्तुति करके आकाश में उड़कर अदृश्य हो गये।

एक साल बीत गया। विनायक चौथ आ पहुँची। नंद ने रंग-बिरंगोंवाली विनायक की बड़ी मूर्ति बनवाई। यशोदा ने मलाई के साथ आटा गूँथकर मोदक, घी के लड्डू वग़ैरह बनाये।

नैवेद्य की सारी सामग्री थाल ों में भरक र यशोदा ने पूजा के गृह में सजाई और किवाड़ बंद कर बाहर चली आई।

कृष्ण धीरे से पूजा के कमरे में पहुँचा, किवाड़ बंद करके सारे पदार्थ विनायक की मूर्ति के पास ले जाकर गिड़गिड़ाने लगा, ''खाओ भाई, सारे पदार्थ खा डालो।'' विघ्नेश्वर की मूर्ति सूँड़ से उन पदार्थों को लेकर बोली, ''हे कृष्ण, मैं आपके हाथ में जो पदार्थ थमा दूँ, उन्हें आपको भी खाना पड़ेगा। विघ्नेश्वर के इतिहास में यह तो सुंदर काँड है।'' इन शब्दों के साथ विनायक ने कृष्ण के मुँह में बहुत सारे पदार्थ एक साथ ठूँस डाले। इस पर थाल के थाल खाली होने लगे।

यशोदा ने पूजा मंदिर की ओर बढ़ते गवाक्ष में से अंदर में होनेवाले सुंदरकांड को देख लिया। वह एक दम चकित रह गई। उसके बदन से पसीना छूटने लगा। फिर अपने को संभालकर मन ही मन सोचने लगी, ''उफ़! मैं तो भ्रम में पड़ गई हूँ। लगता है, कि मेरी आँखों के सामने कोई माया छा गई है।'' यों अपने को समझाकर यशोदा किवाड़ खोलकर भीतर पहुँची।

पर विनायक की मूर्ति जैसी की तैसी रह गई, लेकिन पूजा के सारे पदार्थ गायब थे। कृष्ण भौचक्के हो देख रहा था।

"अरे पेटू, तुमने विनायक की पूजा करने के पहले सारे पदार्थ खा ड़ाले।" यों कहते यशोदा ने कृष्ण की पीठ पर धीरे से थप्पड़ लगायी। इस पर कृष्ण रोते हुए भागकर कालिंदी तड़ाग के पास पहुँचा। उसके पीछे यशोदा के साथ गोकुल के सारे निवासी भी बड़ी आतुरता के साथ चल पड़े।

कालिंदी तड़ाग के कालीय महा नाग के द्वारा गोकुलवासियों की बड़ी हानि होती आ रही थी। कृष्ण कालिंदी तालाब के बीच तक जल पर फैली डाल पर से तालाब में कूद पड़ा। वह नाग पर बिजली की तरह गिर पड़ा। अपने पैरों के घुंघरुओं की ध्वनि करते वह नाग के सिरों पर तांडव नृत्य करने लगा। इस तरह अद्भुत ढंग से कालीय मर्दन हुआ। इस कारण कालीय भी अपने शाप से मुक्त हो गया। उसने अपनी पुत्रियों को ले जाकर पाताल में वासुकी के हाथ सौंप दिया। इस के बाद अपने कालीय रूप को बदलकर विघ्न अब विघ्नेश्वर के अधीन में आ गया।

अपने पुत्र को उठाकर यशोदा घर लौटी तो देखती क्या है? पूजा मंदिर के थालों में वे सारे पदार्थ ज्यों के त्यों हैं। मगर बालक कृष्ण की पीठ पर यशोदा की उंगलियों के निशान साफ़ दिखाई दिये। उन्हें देख यशोदा अपनेको कोसने लगी, "मेरे हाथ टूट जाये ! मेरी आँखों में माया का कोई रोग समा गया है, इसीलिए मैंने अकारण
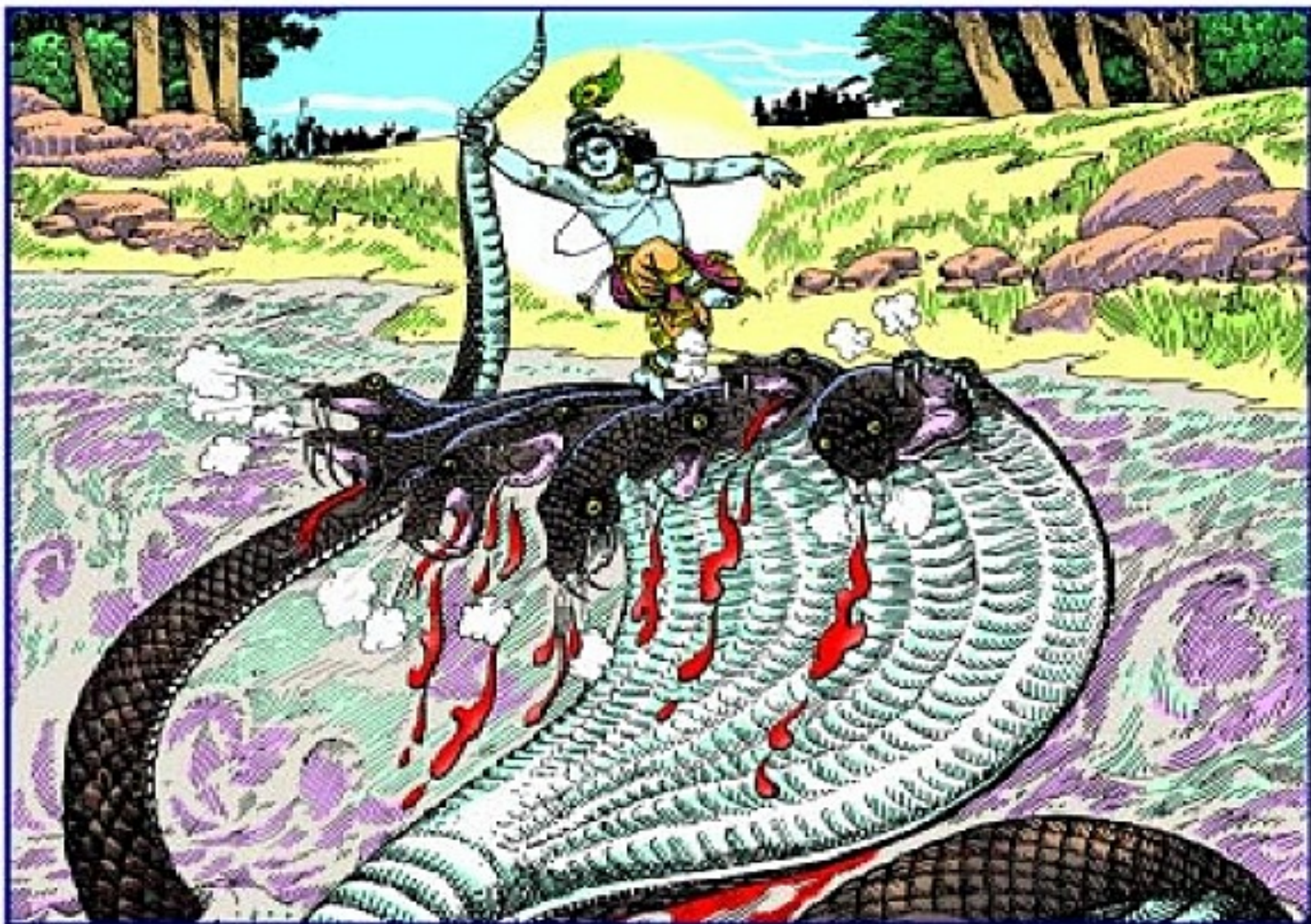
मेरे प्यारे बालकृष्ण को पीटा। मैं पापिन हूँ।'' यों अपने को कोसते यशोदा फफक-फफक कर रो पड़ी।

''माँ, देरी होती जा रही है। तुम पूजा करो न?'' बालकृष्ण ने कहा। इस पर यशा ेदा और नंद ने कृष्ण के हाथों से पूजा कराई। तब नैवेद्य को सारे गाँव में बाँट दिया। गोकुलवासी आपस में यह कहते फूले न समाये कि उन पदार्थों में एक दम अमृत भरा पड़ा है। अब बालकृष्ण बड़े हो गये थे। एक दिन गोवर्द्धन पर्वत को उठाकर कृ ष्ण ने मूसलधार वर्षा से गायों तथा गोकुलवासियों की रक्षा करके इन्द्र के गर्व को तोड़ डाला।

एक दिन कृष्ण गोवर्द्धन के समीप गायें चराते थे। तब एक बुजुर्ग अपनी कांख में ढोल लिये आ पहुँचे और पूछा, ''मैं ने सुना है कि यहाँ पर कृष्ण नामक एक बालक है और बहुत अच्छे ढंग से मुरली बजाता है! मैं उस मुरली की ध्वनि सुनने आया हूँ। क्या तुम कृष्ण का पता बता सकते हो?''

''महाशय, मैं ही वह छोटा-सा कृष्ण हूँ। आप तो कोई मृदंग के बड़े विद्वान मालूम होते हैं। कृपया अपना परिचय दीजिए!'' कृष्ण ने हाथ जोड़कर पूछा।

''मुझे मृदंग केसरी पुकारते हैं। मैं दक्षिण का निवासी हूँ और मथुरा नगर को जा रहा हूँ। सुना है कि कंस धनुर्याग करनेवाले हैं। उस वक़्त मैं अपने मृदंग की विद्वत्ता प्रदर्शित करना चाहता हूँ।'' उस बुजुर्ग ने जवाब दिया।

उस बुजुर्ग के पैर में रत्न खचित कड़े, हाथों में सिंह के सिर की आकृति वाले आभूषण, कंठ में सोने के नींबू के बराबर वाले मनकों की माला तथा कानों में बड़े-बड़े स्वर्ण कुंडल चमक रहे थे। मृदंग पर नव रत्न खचित बहुत सारे स्वर्ण पदक बिठाये गये थे।

कृष्ण उन्हें देख आश्चर्य प्रकट करते हुए बोले, ''महानुभाव! मैं गाय चरानेवाला एक साधारण गोप बालक हूँ। मेरी मुरली साधारण बांस का टुकड़ा है। आपके दक्षिण के विद्वान ताल के लिए प्रसिद्ध हैं। मैं तो किसी साधारण राग का आलाप करते गायों को चराने वाला गायक हूँ।''

(क्रमशः)
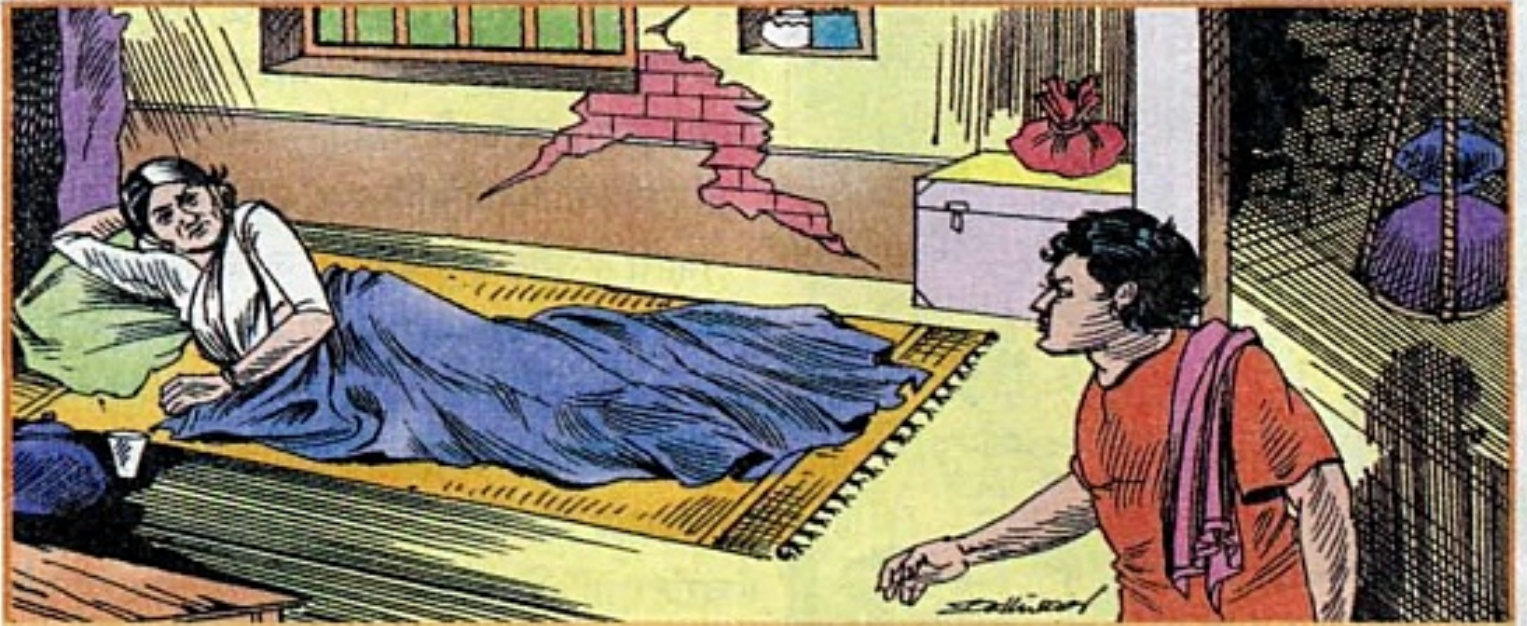
उपकारी

रतन शंखवर नामक एक गाँव का निवासी था । वह बीस साल का था । उसके माता-पिता उसके बचपन में ही चल बसे, इसलिए उसकी दादी ने उसे पाला-पोसा। वह अव्वल दर्जे का सुस्त था। वह दिवा-स्वप्न देखा करता था कि भाग्य देवता उसपर किसी दिन प्रसन्न होंगे और उसे बड़ा धनवान बना देंगे।

दादी गाँव के दो-तीन घरों में कपड़े धोने और बरतन मांजने का काम करती थी । इससे जो रक़म मिलती थी, उससे वह घर चलाती थी । एक बार वह बीमार पड़ गयी । उसने रतन को समझाते हुए कहा, ''देखो, अब मैं काम के लायक़ नहीं रही । तुम जंगल जाकर लकड़ियाँ काटकर ले आओ । उन्हें बेचकर जो पैसे मिलेंगे, उससे चार-पाँच दिनों तक गुज़ारा कर लेंगे।''

रतन को लाचार होकर दादी की बात माननी पड़ी। कुल्हाड़ी कंधे पर डालकर वह जंगल चला गया । लकड़ियाँ काटकर जब वह उन्हें बाँध रहा था तब उसने देखा कि पेड़ की जड़ में एक लता चमक रही है । ऐसी चमकती लता को इसके पहले उसने कभी नहीं देखा था। उसने लता तोड़ डाली और अपने साथ ले आया । घर पहुँचकर वह दादी को दिखाना चाहता था।

घर लौटते समय रास्ते की बग़ल में उसने देखा कि एक औरत बिना हिले-डुले चुपचाप ज़मीन पर पड़ी हुई है और पास ही एक आदमी बैठा हुआ है, जो बहुत ही दुखी है । उनके पास आकर उसने उस आदमी से उसके दुख का कारण पूछा । तब मालूम हुआ कि उस आदमी का नाम धनंजय है । वह अपने ही गाँव में नहीं

- कृष्णकुमारी -

बल्कि आसपास के गाँवों में भी सुप्रसिद्ध वैद्य है । चिकित्सा के लिए आनेवाले रोगी अगर ग़रीब हों तो वह निःशुल्क उनकी चिकित्सा करता है। रोगी धनी हो तो वे जो देते हैं, उसी से वह संतोष कर लेता है। इस वजह से वह कुछ कमा भी नहीं पाया।

कभी-कभी तो दूर से आनेवाले रोगियों की आकस्मिक मृत्यु हो जाती थी, क्योंकि सही समय पर उनकी चिकित्सा नहीं हो पाती थी। धनंजय को इस बात पर बेहद दुख होता था । वह सोचता था कि हर गाँव में एक चिकित्सा केंद्र हो तो कितना अच्छा होता ।

ऐसे समय पर एक साधु उसके गाँव आया । धनंजय ने उनका आतिथ्य-सत्कार किया, इससे संतुष्ट साधु ने उससे कहा कि मैं तुम्हारी कोई इच्छा पूरी करूँगा । बोलो, तुम्हें क्या चाहिए? धनंजय ने अपने मन की बात साधु से बतायी और कहा, ''स्वामी, गाँवों में चिकित्सा केंद्र हों तो रोगियों की चिकित्सा सही समय पर हो सकती है और उन्हें बचाया जा सकता है ।''

इसपर साधु हँस पड़ा और बोला, ''ऐसे चिकित्सा केंद्रों का निर्माण राजा ही कर सकते हैं, क्योंकि उनके पास अपार धन है और जन साधारण के लिए उन्हें ऐसे काम करने भी चाहिए ।'' फिर एक-दो क्षण तक मौन रहने के बाद साधु ने कहा, ''एक काम करना । आज से तीसरे दिन महाराज का जन्म-दिन है । उस समय संपन्न होनेवाले उत्सव में उन्हें एक मूल्यवान रत्न भेंट में देना । मैं तुम्हें ऐसा वर देता हूँ, जिससे तुम पत्थर को भी रत्न में बदल सकते हो । बाद में उन्हें चिकित्सा केंद्रों के निर्माण से संबंधित अपने विचार बताना । तुम्हारी कामना अवश्य पूरी होगी ।''

धनंजय अपनी पत्नी को लेकर राजधानी के लिए निकल पड़ा । रास्ते में साँप ने उसकी पत्नी को डँस लिया और अब वह मरणावस्था में थी।

रतन ने धनंजय की बातें ध्यान से सुनीं। तब धनंजय ने अकस्मात् उसकी कमर में लटक रही चमकती लता देखी ।

उसे देखते ही चकित धनंजय ने रतन से पूछा, ''चमक रही यह महत्वपूर्ण जड़ी-बूटी तुम्हें कहाँ मिली? यह जड़ी-बूटी यदि मुझे दे दो तो मैं अपनी पत्नी को बचा लूँगा ।''

''तुम्हें यह जड़ी-बूटी दे दूँ तो इससे मुझे क्या लाभ होगा?'' रतन ने पूछा। ''राजा को रत्न भेंट स्वरूप दूँगा और वे जो धन देंगे, उसमें से आधा मैं तुम्हें दूँगा। मैं तुम्हें वचन देता हूँ।'' धनंजय ने कहा।

रतन मन ही मन सोचने लगा कि राजा जितना भी धन देंगे, पूरा का पूरा अपना बना लूँ। उसने धनंजय के सामने शर्त रखी कि लता को सुपुर्द करने के पहले वह पत्थर को रत्न में बदले। धनंजय को लाचार होकर यह करना पड़ा। उसने देखते-देखते पत्थर को रत्न में बदल दिया। तब रतन ने वह जड़ी-बूटीवाली लता उसे दे दी और रत्न ले लिया।

धनंजय ने तुरंत वह जड़ी-बूटी पानी में डाली और दो मिनटों के बाद उसे बाहर निकाला। फिर वह पानी उसने अपनी पत्नी को पिलाया। इससे वह उठकर बैठ गयी।

पत्नी के जीवित हो जाने पर बहुत ही प्रसन्न धनंजय ने, रतन से कहा, ''परोपकार करने के उद्देश्य से राजा से धन पाने की मेरी इच्छा है। मेरा एकमात्र उद्देश्य है, रोगियों के लिए चिकित्सा केंद्रों का निर्माण। इसलिए राजा तुम्हें जो धन देंगे, उसमें से आधा मुझे देना होगा।''

''हाँ, हाँ, ज़रूर दूँगा।'' झूठा वादा करते हुए रतन वहाँ से निकल पड़ा। जब पत्नी स्वस्थ हो गयी तब धनंजय भी राजधानी गया। वह चाहता था कि रतन को राजा से जो धन भेंट स्वरूप मिलेगा, उसमें से आधा रतन से वहीं ले लूँ। अगर मौक़ा मिले तो वह चाहता था कि गाँवों में चिकित्सा केंद्रों के निर्माण की आवश्यकता पर राजा को सविस्तार बताऊँ।

राजधानी पहुँचने पर उसने देखा कि वहाँ उत्सव का वातावरण है। दूर-दूर प्रदेशों से प्रमुख अतिथि आये हुए हैं। राजा को आशीर्वाद देने कुछ साधु भी पधारे है। उनमें से वे साधु भी हैं, जिन्होंने धनंजय को वरदान दिया था।

धनंजय का और रतन का दो-तीन बार आमना-सामना हुआ, पर रतन ने उससे बात तक नहीं की। उसके बरताव को देखते हुए धनंजय को यह जानने में देर नहीं लगी कि रतन के मन में खोट है। उसने साधु को पूरा वृत्तांत बताया।

राजा का अभिनंदन-समारोह शुरू हुआ।

कितने ही दिग्गजों ने राजा की भूरि-भूरि प्रशंसा की और जन्म-दिनोत्सव के इस अवसर पर उन्हें बधाई दी। अतिथि उनके लिए जो भेंट ले आये थे, वे एक-एक करके उन्हें समर्पित करने लगे। राजा भी अतिथियों को भेंट-स्वरूप सोने की अशर्फ़ियाँ, मूल्यवान वस्तुएँ देते गये। रतन ने भी राजा को रत्न समर्पित किया।

परंतु आश्चर्य की बात यह है कि वह रत्न राजा के हाथ में आते ही पत्थर में बदल गया और फिसलकर राजा के पैरों पर गिर गया। उनकी उंगलियों से रक्त बहने लगा। राजा एकदम नाराज़ हो उठे और रतन को कैद करने का आदेश दिया।

रतन की समझ में नहीं आया कि ऐसा क्यों हुआ। वह पास ही बैठे धनंजय की ओर एकटक देखने लगा और अपने हाव-भाव से प्राण-भिक्षा माँगने लगा।

कोमल हृदय के धनंजय ने साधु की ओर देखा तो साधु आगे आये और रतन से बोले, ''रतन, तुम्हें वह जड़ी-बूटी अनायास ही मिली। उस जड़ी-बूटी से धनंजय की पत्नी बच गयी, पर तुम इसका फ़ायदा उठाना चाहते थे। धन की आशा में तुमने वह रत्न ले लिया और मन में ठान लिया कि जो धन-राशि राजा तुम्हे देंगे, उसमें से एक पाई भी धनंजय को न दूँ। अतः तुम राजा से भेंट पाने के योग्य नहीं हो। इसीलिए मैंने उस रत्न को पत्थर में बदल दिया।''

रतन रोता हुआ साधु के पैरों पर गिर पड़ा। दूसरे ही क्षण पत्थर रत्न में बदल गया। राजा ने उस रत्न की काफ़ी प्रशंसा की और यह भी सुना कि धनंजय यहाँ किस काम से आया है। इससे उन्हें मालूम भी हो गया कि राज्य में चिकित्सा की सुविधाओं का अभाव है।

मंत्री को बुलाकर राजा ने आज्ञा दी कि हर गाँव में एक चिकित्सा केंद्र की स्थापना की जाए। फिर उन्होंने इन केंद्रों के पर्यवेक्षण की जिम्मेदारी धनंजय को सौंपी। साथ ही राजा ने रतन को भी नौकरी दी, क्योंकि लोभी होते हुए भी उससे प्रजा का हित हुआ था।

व्यापारी की जिम्मेदारी

कठियापुर नामक गाँव में नारायण नामक एक व्यापारी था। लोग उसकी इज्जत करते थे। प्रतिष्ठा के साथ-साथ उसने काफ़ी धन भी कमाया। एक दिन अचानक उसे लगा कि मैं बूढ़ा होता जा रहा हूँ। वह सोचने लगा कि अब अच्छा यही होगा कि अपने तीन बेटों में से किसी एक को व्यापार की जिम्मेदारी सौंप डालूँ। एक दिन उसने तीनों बेटों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा, ''देखो, मैं अपना व्यापार तीनों में बाँटना नहीं चाहता। तुममें से किसी एक के सुपुर्द करना चाहता हूँ। व्यापार संभालने के लिए योग्यता की ज़रूरत पड़ती है। योग्य व्यक्ति ही व्यापार संभालने की क्षमता रखता है। तुम तीनों में से कौन योग्य हो, यह जानने के लिए एक छोटी परीक्षा लूँगा। क्या तुम लोगों को कुछ कहना है?''

तीनों ने पिता का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। नारायण ने अपनी जेब में से तीन रुपयों के सिक्के निकाले। एक-एक को एक-एक रुपया देते हुए उसने कहा, ''यह रुपया लो और सूरज ढलने से पहले कोई अच्छा काम करके दिखाओ।''

बिना कुछ कहे वे तीनों वहाँ से चले गये। तीनों अपने पिता को बहुत चाहते थे और उसकी बड़ी इज़्ज़त करते थे।

शामको नारायण बाज़ार से लौटा। उसने देखा कि तीनों बेटे बड़ी ही बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रहे हैं। पहले उसने अपने बड़े बेटे सोमेश्वर को बुलाया और पूछा, ''बोलो, मैंने तुम्हें जो रुपया दिया, उससे तुमने क्या अच्छा काम किया?''

सोमेश्वर ने खुश होते हुए कहा, ''राम के

- ईश्वकर -

मंदिर के पास भूख के मारे तड़पती हुई एक बूढ़ी को देखा। मैंने वह रुपया उसे दे दिया और उससे कहा कि इस रुपये से कुछ खरीद लो और अपनी भूख मिटाओ। भूखे की भूख मिटाना अच्छा काम है न?''

नारायण ने मुस्कुराते हुए दूसरे बेटे रामब्रह्म को बुलाया और पूछा, ''बताओ, तुमने क्या किया?''

रामब्रह्म ने गर्व-भरे स्वर में कहा, ''हमारा व्यापार और बढ़े, इसके लिए मैंने मंदिर में पूजा करवायी और पुजारी को वह रुपया दे दिया।''

नारायण ने फिर तीसरे बेटे लक्ष्मण को बुलाया और उससे पूछा, ''कहो, तुमने क्या अच्छा काम किया? कैसे खर्च किया?''

लक्ष्मण ने चुपचाप अपनी जेब से रुपया निकाला और पिता के सामने रख दिया। तब नारायण ने कहा, ''इसका यह मतलब हुआ कि तुमने कुछ नहीं किया। बड़े किफ़ायती लगते हो।''

लक्ष्मण ने मुस्कुराते हुए कहा, ''मुझे मालूम है कि बेकार खर्च करना आपको पसंद नहीं। परंतु मैंने खर्च किया और अच्छा काम भी किया। साथ ही आपके एक रुपये को लौटा भी दिया।''

नारायण की समझ में नहीं आया कि उसके कहने का क्या मतलब है।

तब लक्ष्मण ने कहा, ''पिताजी, आपने जो रुपया दिया, उससे मैंने तीन कुम्हड़े खरीदे। बाज़ार में एक दुकान के पास बैठ गया और आते-जाते लोगों को उनकी ख़ासियत के बारे में कहने लगा। तीनों कुम्हड़ों को दो रुपयों में बेच दिया। एक रुपये का जो लाभ हुआ, उसमें से आधे रुपये से चिड़वा खरीदा और एक भूखे बच्चे को दे दिया। फिर बचा आधा रुपया मंदिर की हुंडी में डाल दिया। आपका रुपया आपको लौटा दिया।''

बेटे की दूरदृष्टि, बुद्धिमानी व दयालुता पर नारायण को आश्चर्य तो हुआ ही, साथ ही वह बहुत प्रसन्न भी हुआ। उसने व्यापार की जिम्मेदारी लक्ष्मण को सौंपने में विलंब नहीं किया।

अक़्लमंदी की रवानगी

चित्रपुरी छोटा-सा एक राज्य था। युवराज चित्रवर्मा को गद्दी संभाले कुछ ही दिन हुए थे। हालांकि शासन संभालने में उसका अनुभव नहीं के बराबर था, फिर भी वह योग्य, समर्थ व बुद्धिमान मंत्रियों की सहायता से राज्य का कार्य-भार भली भाँति संभाल रहा था।

अंगराज्य, चित्रपुरी का पड़ोसी राज्य था। सब दृष्टियों से वह चित्रपुरी से बड़ा राज्य था। वर्धन उस राज्य का राजा था। लंबे अर्से से उसकी चाह थी कि चित्रपुरी को अपने राज्य में मिला लूँ। उसके पिता की भी यही इच्छा थी, पर वे अपने जीवन-काल में अपनी यह इच्छा पूरी नहीं कर सके। वर्धन को लगा कि चित्रपुरी पर विजय पाने का यही सुअवसर है, क्योंकि चित्रवर्मा अभी-अभी सिंहासन पर बैठा है और वह अनुभवहीन है, राजनीति के दाव-पेंचों से वह अपरिचित है।

वर्धन ने एक दिन अपने मंत्रियों को बुलाया और उनसे सलाह माँगी। राजा की इस सोच पर उन्होंने हर्ष व्यक्त किया और कहा, ''आपने बिलकुल ठीक सोचा। इन परिस्थितियों में चित्रपुरी पर विजय पाने की संभावना है। परंतु हमें इस काम में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। पहले यह जान लेना आवश्यक है कि शत्रु कितना बलवान है, चाहे वह बुद्धि बल हो या सैन्यबल। इसे जाने बिना युद्ध छेड़ देना बुद्धिमानी नहीं कहलायेगी। अतः पहले हमें वहाँ के पदाधिकारियों के बुद्धि-कौशल की परीक्षा लेनी होगी।''

वर्धन ने कहा कि आप ही निर्णय कीजिए कि यह कैसी परीक्षा हो, जिससे उनके बुद्धि-कौशल के बारे में जाना जा सके। उन सबने मिलकर इस विषय पर बहुत देर तक तर्क-वितर्क किया और आख़िर वर्धन को एक पत्र सौंपते हुए उन्होंने कहा, ''इस पत्र को आप चित्रवर्मा के पास भेजिये। उत्तर मिलने पर हम इस निर्णय पर आयेंगे कि आगे क्या करना है।'' उस पत्र का विषय यों था ''आप अपने राज्य से अक़्लमंदी रवाना कीजिए।''

चित्रवर्मा को वह पत्र अंग राज्य के राजदूत द्वारा प्राप्त हुआ। उसे पढ़कर वह आश्चर्य में डूब गया। उसने वह पत्र मंत्रियों को दिखाया। वे भी इसे पढ़कर चकित रह गये। उन सबको वर्धन की इच्छा बड़ी ही अजीब लगी। वस्तुओं की, सामग्री की रवानगी हो सकती है, परंतु भला अक़्लमंदी की रवानगी कैसे संभव हो सकती है? कोई अदृश्य वस्तु कैसे भेजी जा सकती है?

यह रहस्य जब मंत्रियों की भी समझ में नहीं आया तब चित्रवर्मा का चेहरा विवर्ण हो गया। तब उम्र में सबसे छोटा मंत्री बृहस्पति उठ खड़ा हुआ और बोला, ''राजन्, इसका उत्तर देने के लिए मुझे चार महीनों का समय दीजिए। राजा वर्धन जिस अक़्लमंदी की रवानगी चाहते हैं, वह मैं रवाना करूँगा। परंतु एक शर्त है, इन चार महीनों में आप इस विषय में मुझसे कोई सवाल नहीं करेंगे।'' चित्रवर्मा ने सहर्ष उसकी शर्त मान ली। फिर उसने वर्धन को पत्र लिखा, ''आपकी इच्छा के अनुसार ही अक़्लमंदी रवाना करूँगा। पर इसके लिए मुझे चार महीनों की अवधि चाहिए।''

चार महीने लगभग समाप्त होनेवाले थे। बृहस्पति एक बड़ी थैली लिये राजा के पास आया। तब वहाँ और मंत्री भी मौजूद थे। उसने थैली दिखाते हुए राजा से कहा, ''राजन्, वर्धन जो अक़्लमंदी चाहते थे, वह इस थैली में है। यह थैली राजा वर्धन के यहाँ भेज दीजिए। पर इस बात की सावधानी बरतियेगा कि इसे कोई चोट न पहुँचे।'' बड़ी ही सावधानी से यह थैली बंधी हुई थी। कोई यह सोच भी नहीं सका कि उस थैली में आख़िर है क्या? चित्रवर्मा ने भी कोई सवाल किये बिना वह थैली अंग राज्य को भेज दी।

वर्धन व उसके मंत्रियों ने बड़ी ही सावधानी के साथ वह थैली खोली। उसमें मिट्टी का एक गागर था। उसके ऊपर एक पतला ढक्कन था। उसके अंदर एक बड़ा कुम्हड़ा था। वह कुम्हड़ा पूरे गागर में फैला हुआ था। उसमें थोड़ी-सी भी अतिरिक्त जगह नहीं रह गयी थी। डंडी मात्र बाहर निकली हुई थी। गागर कहीं भी फूटा हुआ नहीं था। वह एकदम नया गागर था। उसे देखकर वर्धन और उसके मंत्री चकित रह गये। उस गागर से एक पत्र बंधा हुआ था। बड़ी ही उत्कंठा के साथ उसने वह पत्र खोला, जिसमें लिखा हुआ था, ''राजा वर्धन के चाहे मुताबिक अक़्लमंदी रवाना कर रहे हैं। इस गागर में अक़्लमंदी है। गागर को फोड़े बिना कुम्हड़े को

बाहर निकालिये। इस भेंट के मिलते ही हमें सूचित कीजिए।''

वहाँ उपस्थित सभी एक-दूसरे का मुँह ताकते रह गये। उनकी समझ में नहीं आया कि इतने तंग मुँहवाले गागर में इतना बड़ा कुम्हड़ा कैसे समा गया? उल्टे उन्होंने हमें चुनौती दी कि गागर को फोड़े बिना कुम्हड़े को हम बाहर निकालें। उनका दावा है कि यह ''अक़्लमंदी'' है। यह तो एकदम असंभव है। मौन धारण करते हुए सबने सिर झुका लिये। तब वर्धन ने मंत्रियों को संबोधित करते हुए कहा, ''हमने सोच रखा था कि वे बुद्धिहीन हैं। पर इस घटना ने साबित कर दिया कि हमारे शत्रु हमसे ज़्यादा बुद्धिमान हैं। अच्छा यही होगा कि हम ऐसे बुद्धिमानों से युद्ध न करें, उनसे दोस्ती करने में ही हमारी भलाई है।'' फिर उसने चित्रवर्मा को पत्र लिखा, ''आपकी भेजी भेंट हमें मिली। आपकी प्रशंसा किये बिना मुझसे रहा नहीं जाता। आपसे दोस्ती करने की मेरी प्रबल इच्छा है। आपके सहयोग की प्रतीक्षा में, आपका मित्र, वर्धन।''

यह समाचार पाकर चित्रवर्मा बहुत प्रसन्न हुआ। अब तक उसकी समझ में नहीं आया कि वर्धन की चाही अक़्लमंदी कैसे रवाना की गयी? उसने बृहस्पति को बुलवाया और उसे हार्दिक बधाई देते हुए पूछा, ''मंत्रिवर, आपके इस काम ने मेरे गौरव में चार चांद लगा दिया है। क्या जान सकता हूँ कि आख़िर आपने क्या किया जिससे शत्रु को भी मैत्री का हाथ बढ़ाना पड़ा?''

बृहस्पति ने तब पूरा विवरण देते हुए कहा, ''मैंने ऐसा कोई बड़ा काम नहीं किया। चार महीने पहले मैंने कुम्हड़े की एक लता रोपी। थोड़े ही दिनों में उसमें छोटी-छोटी बौरियाँ निकल आयीं। एक छोटी-सी बौरी को पतले मुँहवाले एक गागर में डाला और बड़ी ही सावधानी से उसकी देखरेख करने लगा। जब वह पूरे गागर में फैल गयी तब मैंने गागर सहित कुम्हड़े को थैली में बंद किया और फिर आपके द्वारा राजा वर्धन को भिजवाया। उसके साथ-साथ मैंने उन्हें एक पत्र भी लिखा कि इस गागर में अक़्लमंदी है और गागर को फोड़े बिना इसे निकाल लीजिए। इसका क्या उत्तर मिला, आप तो जानते ही हैं।''
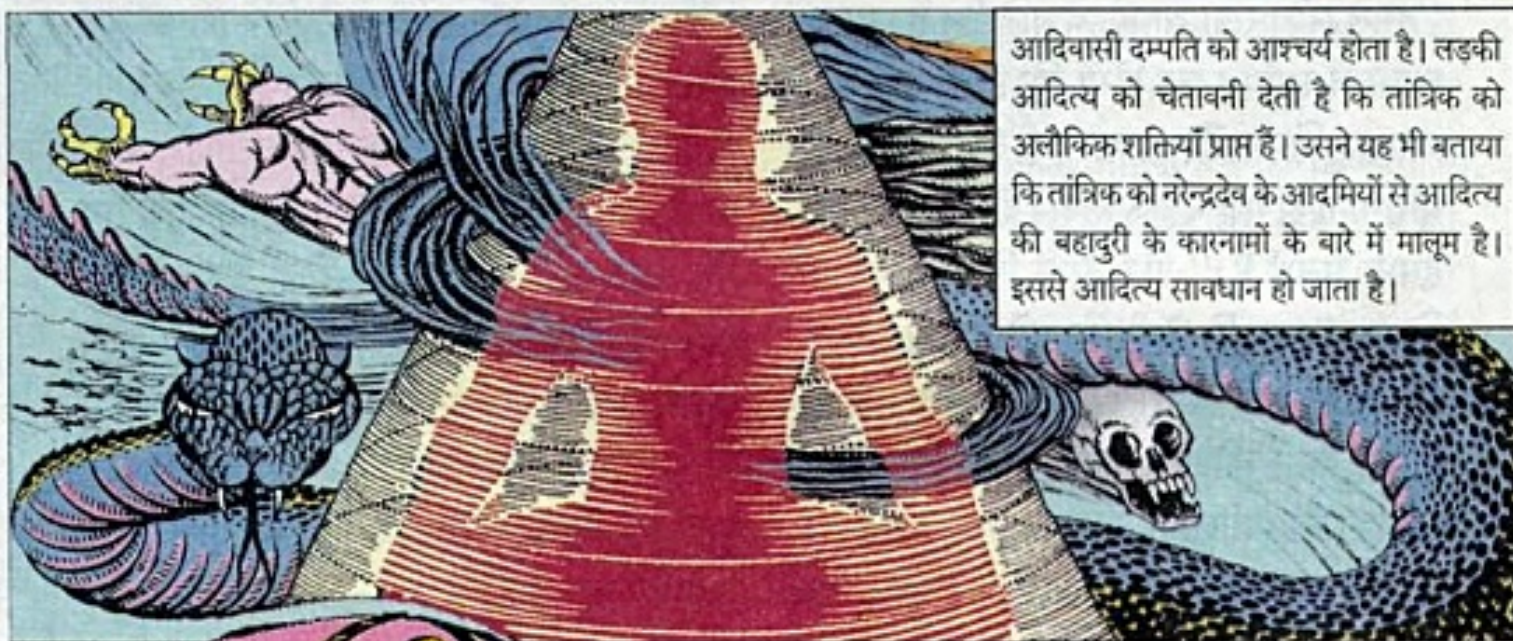
आदिवासी दम्पति को आश्चर्य होता है। लड़की आदित्य को चेतावनी देती है कि तांत्रिक को अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त हैं। उसने यह भी बताया कि तांत्रिक को नरेन्द्रदेव के आदमियों से आदित्य की बहादुरी के कारनामों के बारे में मालूम है। इससे आदित्य सावधान हो जाता है।

नरेन्द्रदेव और उसका बेटा तांत्रिक के अतिथि हैं। कमान्डर और उसके आदमी आपको बंदी बनाने के लिए जा रहे हैं, महानुभाव !

नरेन्द्रदेव ! वह कहाँ है? मुझे जल्दी बताओ !

मैंने सुना कि वे आज रात को जा रहे हैं।
पहाड़ी के नीचे वे नाव पर सवार होकर दूसरे किनारे पर जायेंगे।
मेरे आदमी जायें और पहाड़ी के नीचे उनकी प्रतीक्षा करें।

आदित्य अपने शिविर में एक रणनीति की योजना बनाता है।
आदिवासी दम्पत्ति हमारे आदमियों को मार्ग दिखा सकते हैं।
उन्हें वहाँ पहले पहुँचने के लिए गुप्त मार्ग से जाना होगा।
वहाँ कौन है?

आदित्य कुछ आदिवासियों से मिलता है। वे तांत्रिक से नाराज हैं।
मैं तुम सबकी सहायता के लिए आया हूँ। यह बलि समाप्त हो जायेगी।
नागबंधु के पास जाने में तुम्हें हमारी सहायता अवश्य करनी होगी।
हमलोग आपको उस मंदिर पर ले जायेंगे जहाँ बलि दी जाती है।

आदिवासी बड़े आनन्दविभोर हैं।

तुममें से कुछ लोग जाकर अग्निकुण्ड को प्रज्वलित करो और उसके चारों ओर नाचो। तांत्रिक तब शायद बाहर आये।

वह हमारा रक्षक है!

नरेन्द्रदेव अपने आदमियों के साथ जाने के लिए तैयार होता है।

जाने से पूर्व मुझे तांत्रिक से अवश्य मिलना चाहिए और उसे चन्द्रपुरी आने के लिए आमंत्रित करना चाहिए।

लेकिन नरेन्द्रदेव निराश हो जाता है।

वह आराम कर रहे हैं और उसमें विघ्न नहीं डाल सकते। घबराओ नहीं, मैं उन्हें चन्द्रपुरी ले आऊँगा।

आदित्य कुछ अपने आदमियों को आदिवासी दम्पत्ति के मार्ग-रक्षण में भेजता है जो उन्हें गुप्त मार्ग से ले जायेगी।

गुफा मंदिर के बाहर गीत और नाच के शोर से तांत्रिक नागबंधु जाग पड़ता है।
अग्नि कुण्ड प्रज्वलित है! वे लोग अधिक आनंदित होंगे जब आदित्य की बलि दी जायेगी।

नरेन्द्रदेव और आदिवासी प्रमुख को ले जाने के लिए एक सुसज्जित नाव तैयार है। नाव जैसे ही चलने को होती है...
सावधान! नदी में घड़ियाल होंगे!
(क्रमशः)

मनोरंजन टाइम्स

मेढ़की की मदद करो !

छोटी मेढ़की को संदेह है कि इस भुलभुलैया से क्या वह बाहर आ पायेगी जहाँ उल्लसित सर्प उसे निगल जाने के लिए बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

क्या तुम मुझे दूसरे किनारे पर सुरक्षित रूप से पहुँचने में मदद कर सकते हो?

राहुल की छाया

शिशु राहुल फर्श पर घुसकने में व्यस्त है। उसे नहीं मालूम कि तीनों में से उसकी छाया कौनसी है। क्या तुम पहचान सकते हो?

दोषपूर्ण दृश्य

यह चित्र उल्लसित होकर खेलते हुए पशु-पक्षियों के साथ पूर्ण जंगल दृश्य के समान दिखाई पड़ता है। किन्तु इसमें सबकुछ ठीकठाक नहीं है। इस दृश्य में क्या तुम त्रुटियों को खोज निकाल सकते हो?

(उत्तर पृष्ठ ६६ पर)

खोज निकालो!

ये दो चित्र एक समान लग सकते हैं, किंतु उनके बीच आठ भिन्नताएँ हैं। शुभ खोज !

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

अक्तूबर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

चेतना

दिल्ली पब्लिक स्कूल, यमुनापुरम, फेज-२, भूर चौराहा, बुलन्द शहर, उत्तर प्रदेश

विजयी प्रविष्टि

हो तेरी ज्योति से ज्योतित, मेरा अन्तर्मन ।
इन्द्र धनुष के रंगों से भर जाये, जग-जीवन ।।

मनोरंजन टाइम्स (पृष्ठ ६४-६५) के उत्तर

उन्हें खोज निकालो !

१. तरकश में तीरों की संख्या
२. चाँदमारी के वृत
३. ड्रेस के डिजाइन
४. पृष्ठभूमि में पर्वत
५. पक्षी के सिर पर पंख
६. लड़के के सिर की पट्टी के ऊपर बिन्दुओं की संख्या
७. पक्षी के पंख
८. पसीने की बून्दों की संख्या

राहुल की छाया - ३

दोषपूर्ण दृश्य

तोता पेड़ को खोदते हुए, दिन में चमगादड़, बाघ घास खाते हुए, खरगोश की पूँछ, खरगोश माँस खाते हुए, कंगारू की थैली में पप्पी, कंगारू के सिर पर सींग

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited. No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

CHANDAMAMA (Hindi) DECEMBER 2002
Regd. with Registrar of Newspaper for India No. 1087/57
Registered No. TN/CPMG-866/2002
Licensed to post without prepayment No. 541/02 /
Foreign - WPP. No. 560